PRACTICE MODEL PAPER 2

(Based on New Revised Syllabus)

(सम्पूर्ण हल)

हिन्दी कक्षा | 12

समय : 3 घण्टे 15 मिनट   पूर्णांक : 100

निर्देश—(i) प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।

(ii) इस प्रश्न-पत्र में दो खण्ड हैं। दोनों खण्डों के सभी प्रश्नों के उत्तर देना आवश्यक है।

खण्ड 'क'

1. (क) 'अष्टयाम' रचना के लेखक हैं— 1

(i) जटमल (ii) नाभादास
(iii) रामप्रसाद निरंजनी (iv) विट्ठलनाथ।

उत्तर : (ii) नाभादास।

(ख) 'हिन्दी गद्य साहित्य' के जनक माने जाते हैं— 1

(i) राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द
(ii) लक्ष्मणसिंह
(iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(iv) रायकृष्णदास।

उत्तर : (iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

(ग) निम्न में से हिन्दी की पहली कहानी मानी जाती है— 1

(i) 'जैसे उनके दिन फिरे'
(ii) 'इन्दुमती'
(iii) 'उसने कहा था'
(iv) 'नीलकमल देश की राजकन्या'।

उत्तर : (ii) 'इन्दुमती'।

(घ) 'ब्राह्मण' पत्रिका के सम्पादक थे— 1

(i) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
(ii) प्रतापनारायण मिश्र
(iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(iv) आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी।

उत्तर : (ii) प्रतापनारायण मिश्र।

(ङ) 'सरयूपार की यात्रा' की विधा है— 1

(i) आत्मकथा (ii) यात्रावृत्त
(iii) रेखाचित्र (iv) संस्मरण।

उत्तर : (ii) यात्रावृत्त।

2. (क) 'अनामदास का पोथा' के रचनाकार हैं— 1

(i) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ii) महावीरप्रसाद द्विवेदी
(iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (iv) वासुदेवशरण अग्रवाल।

उत्तर : (i) हजारीप्रसाद द्विवेदी।

(ख) 'भारत भारती' के रचनाकार हैं— 1

(i) जयशंकरप्रसाद (ii) मैथिलीशरण गुप्त
(iii) महादेवी वर्मा (iv) सुभद्राकुमारी चौहान।

उत्तर : (ii) मैथिलीशरण गुप्त।

(ग) सुमित्रानन्दन पन्त की रचना है— 1

(i) 'झरना' (ii) 'चिदम्बरा'
(iii) 'यामा' (iv) 'उर्वशी'।

उत्तर : (ii) 'चिदम्बरा'।

(घ) सामान्य रूप से प्रगतिवादी काव्य की समय-सीमा मानी जाती है— 1

(i) सन् 1930 से 1946 तक
(ii) सन् 1932 से 1947 तक
(iii) सन् 1936 से 1943 तक
(iv) सन् 1940 से 1950 तक।

उत्तर : (iii) सन् 1936 से 1943 तक।

(ङ) प्रयोगवादी काव्यधारा के कवि हैं— 1

(i) रामधारीसिंह 'दिनकर'
(ii) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(iii) सुमित्रानन्दन पन्त
(iv) पं० जगन्नाथदास 'रत्नाकर'।

उत्तर : (ii) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'।

3. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए— $5 \times 2 = 10$

भाषा संस्कृति का एक अटूट अंग है। संस्कृति परम्परा से निःसृत होने पर भी परिवर्तनशील और गतिशील है। उसकी गति विज्ञान की प्रगति के साथ जोड़ी जाती है। वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रभाव के कारण उद्भूत नई सांस्कृतिक हलचलों को शाब्दिक रूप देने के लिए भाषा के परम्परागत प्रयोग पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए नए प्रयोगों की, नई भाव-योजनाओं को व्यक्त करने के लिए नए शब्दों की खोज की महती आवश्यकता है।

प्रश्न : **(क) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।**

उत्तर : प्रस्तुत गद्यांश प्रसिद्ध समालोचक और निबन्धकार **प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी** द्वारा लिखित '**भाषा और आधुनिकता**' नामक निबन्ध से उद्धृत है। यह निबन्ध हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के गद्य भाग में संकलित है।

प्रश्न : **(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर : **रेखांकित अंश की व्याख्या**—प्रो० रेड्डी कहते हैं कि भाषा संस्कृति का अभिन्न अंग है; क्योंकि संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा ही है। संस्कृति की रचना और विकास परम्पराओं के द्वारा होता है। परम्पराएँ क्योंकि परिवर्तनशील होती हैं इसलिए संस्कृति भी कभी एक जैसी नहीं रहती, वह भी परम्पराओं की तरह बदलती रहती है। इस रूप में हम कह सकते हैं कि संस्कृति गतिशील होती है।

प्रश्न : **(ग) "भाषा संस्कृति का एक अटूट अंग है।" इस सूक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर : "भाषा संस्कृति का एक अटूट अंग है।" इस सूक्ति का आशय यह है कि भाषा संस्कृति का अभिन्न अंग है; क्योंकि संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा ही है। इस प्रकार प्रत्येक देश की भाषा का उस देश की संस्कृति से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।

प्रश्न : **(घ) "संस्कृति परम्परा से निःसृत होने पर भी परिवर्तनशील और गतिशील है।" इस पंक्ति का क्या आशय है?**

© CHITRA PRAKASHAN

उत्तर : "संस्कृति परम्परा से निःसृत होने पर भी परिवर्तनशील और गतिशील है।" इस पंक्ति का आशय यह है कि संस्कृति की रचना और विकास परम्पराओं के द्वारा होता है। परम्पराएँ क्योंकि परिवर्तनशील होती हैं, इसलिए संस्कृति भी कभी एक जैसी नहीं रहती, वह भी परम्पराओं की तरह बदलती रहती है। इस रूप में हम कह सकते हैं कि संस्कृति गतिशील होती है।

प्रश्न : (ङ) संस्कृति की गति किसके फलस्वरूप और अधिक तीव्र हो जाती है?

उत्तर : संस्कृति की गति को विज्ञान की प्रगति के फलस्वरूप होनेवाले नित नए आविष्कार और अधिक तेज कर देते हैं।

अथवा

जो कुछ भी हम इस संसार से देखते हैं, वह ऊर्जा का ही स्वरूप है। जैसा कि महर्षि अरविन्द ने कहा है कि हम भी ऊर्जा के ही अंश हैं। इसलिए जब हमने यह जान लिया है कि आत्मा और पदार्थ; दोनों ही अस्तित्व का हिस्सा हैं, वे एक-दूसरे से पूरा तादात्म्य रखे हुए हैं, तो हमें यह एहसास भी होगा कि भौतिक पदार्थों की इच्छा रखना किसी भी दृष्टिकोण से शर्मनाक या गैर-आध्यात्मिक बात नहीं है।

प्रश्न : (क) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर : **पाठ का शीर्षक**—हम और हमारा आदर्श। **लेखक**—डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम।

प्रश्न : (ख) जो कुछ भी हम इस संसार में देखते हैं वह किसका स्वरूप है?

उत्तर : जो कुछ भी इस संसार में देखते हैं, वह ऊर्जा का स्वरूप है।

प्रश्न : (ग) महर्षि अरविन्द ने अस्तित्व का हिस्सा किसको माना है?

उत्तर : महर्षि अरविन्द ने आत्मा और पदार्थ दोनों को अस्तित्व का हिस्सा माना है।

प्रश्न : (घ) गद्यांश के आधार पर 'तादात्म्य' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : गद्यांश के आधार पर 'तादात्म्य' का आशय अन्योन्याश्रित अभिन्न सम्बन्ध से है।

प्रश्न : (ङ) कैसी इच्छा रखना शर्मनाक या गैर-आध्यात्मिक बात नहीं है?

उत्तर : भौतिक पदार्थों की इच्छा रखना शर्मनाक या गैर-आध्यात्मिक बात नहीं है।

4. निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए— 5 × 2 = 10

ब्यापक ब्रह्म सबै थल पूरन हैं, हमहूँ पहचानती हैं।
पै बिना नंदलाल बिहाल सदा 'हरिश्चन्द्र' न ज्ञानहिं ठानती हैं।।
तुम ऊधौ यहै कहियो उनसों हम और कछू नहिं जानती हैं।
पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं।

प्रश्न : (क) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश हिन्दी-साहित्य के युग-निर्माता कविवर **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** द्वारा रचित काव्य-ग्रन्थ **'भारतेन्दु ग्रन्थावली'** से हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के काव्य भाग में संकलित **'प्रेम-माधुरी'** शीर्षक से उद्धृत है।

प्रश्न : (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : **रेखांकित अंश की व्याख्या**—गोपियाँ कहती हैं कि हम परमात्मा की सर्वव्यापकता के विषय में भली प्रकार जानती हैं। हम यह भी जानती हैं कि परमात्मा जल-थल आदि सभी जगह विद्यमान है; किन्तु श्रीकृष्ण के वियोग में हम सब व्याकुल रहती हैं और उन्हें छोड़कर हमें किसी भी प्रकार की ज्ञान-चर्चा रुचिकर नहीं लगती; अर्थात् हम तुम्हारे ज्ञानमार्ग को कोई महत्त्व नहीं देती हैं।

प्रश्न : (ग) कवि ने ब्रह्म का स्वरूप किस प्रकार व्यक्त किया है?

उत्तर : कवि ने ब्रह्म का स्वरूप इस प्रकार व्यक्त किया है कि वह सारे जल-थल को अपने में व्याप्त किए हुए है।

प्रश्न : (घ) गोपिकाएँ ऊधव से क्या निवेदन कर रही हैं?

उत्तर : गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि तुम श्रीकृष्ण से जाकर यह कह देना कि हम गोपियाँ और कुछ नहीं जानतीं। हमारी ये दुःखिया आँखें श्रीकृष्ण के दर्शनों के अतिरिक्त कुछ और स्वीकार नहीं करतीं।

प्रश्न : (ङ) गोपिकाओं का दुःख क्या है?

उत्तर : गोपियों का दुःख यही है कि उनका हृदय और आँखें उनके वश में नहीं हैं तथा श्रीकृष्ण के दर्शन के बिना उन्हें किसी प्रकार चैन नहीं मिलता।

अथवा

स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा,
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरणी मचली!
मेरा पग पग संगीत भरा
श्वासों से स्वप्न पराग झरा,
नभ के नव रँग बनते दुकूल,
छाया में मलय बहार पली।

प्रश्न : (क) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश **श्रीमती महादेवी वर्मा** द्वारा रचित **'सान्ध्यगीत'** नामक काव्य-संग्रह से हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के काव्य भाग में संकलित **'गीत-3'** शीर्षक से उद्धृत है।

प्रश्न : (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : **रेखांकित अंश की व्याख्या**—जिस प्रकार बदली पानी से भरी हुई रहती है, उसी प्रकार मेरी आँखें भी अश्रुपूर्ण रहती हैं। महादेवीजी कहती हैं कि जिस प्रकार बदली में उसके कम्पन का स्थायित्व रहता है; उसी प्रकार मेरे प्राणों में विरह के कारण उत्पन्न दुःख का कम्पन स्थायी रूप से व्याप्त है। जिस प्रकार बदली की गर्जना सुनकर ताप से त्रस्त विश्व प्रसन्न होता है; उसी प्रकार मेरे रुदन से भी घायल संसार को प्रसन्नता मिलती है।

प्रश्न : (ग) 'क्रन्दन में आहत विश्व हँसा' का आशय लिखिए।

उत्तर : 'क्रन्दन में आहत विश्व हँसा' का आशय यह है कि मेरी पीड़ा और रुदन पर भी विश्व हँसकर उसमें आनन्द का अनुभव करता है।

प्रश्न : (घ) लेखिका ने अपनी तुलना किससे की है?

उत्तर : लेखिका महादेवीजी ने अपने जीवन की तुलना बदली से की है।

प्रश्न : (ङ) 'निर्झरिणी' तथा 'दुकूल' शब्द का अर्थ लिखिए।

उत्तर : 'निर्झरिणी' का अर्थ नदी और 'दुकूल' का अर्थ रेशमी दुशाला है।

5. (क) निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए— 3 + 2 = 5

(i) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल
(ii) पं० दीनदयाल उपाध्याय
(iii) डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम।

उत्तर :

(i) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

जीवन-परिचय—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म **सन् 1904 ई०** में मेरठ जनपद के **खेड़ा** ग्राम में हुआ था। इनके माता-पिता लखनऊ में रहते थे; अतः इनका बाल्यकाल लखनऊ में ही व्यतीत हुआ। यहीं इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा भी प्राप्त की। इन्होंने 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' से एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। 'लखनऊ विश्वविद्यालय' ने 'पाणिनिकालीन भारत' शोध-प्रबन्ध पर इनको पी-एच० डी० की उपाधि से विभूषित किया। यहीं से इन्होंने डी० लिट्० की उपाधि भी प्राप्त की। इन्होंने पालि, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति और पुरातत्त्व का गहन अध्ययन किया और इन क्षेत्रों में उच्चकोटि के विद्वान् माने जाने लगे।

हिन्दी के इस प्रकाण्ड विद्वान् को **सन् 1967 ई०** में नियति ने हमसे छीन लिया।

भाषा-शैली—डॉ० अग्रवाल अन्वेषक विद्वान् थे; अतः इनकी भाषा-शैली में उत्कृष्ट पाण्डित्य के दर्शन होते हैं। इनकी भाषा-शैली की विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(अ) भाषागत विशेषताएँ—डॉ० अग्रवाल की भाषा शुद्ध और परिष्कृत खड़ीबोली है, जिसमें सुबोधता और स्पष्टता सर्वत्र विद्यमान है। इन्होंने अपनी भाषा में अनेक देशज शब्दों का प्रयोग किया है; जैसे—अनगढ़, कोख, चिलकते आदि। इन शब्दों के प्रयोग से भाषा में सरलता और

© CHITRA PRAKASHAN

सुबोधता तो उत्पन्न हुई ही है, साथ ही उसमें व्यावहारिक भाषा का जीवन-सौष्ठव भी देखने को मिलता है। इनकी भाषा में उर्दू, अंग्रेजी आदि की शब्दावली, मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग प्रायः नहीं हुआ है। इस प्रकार इनकी प्रौढ़, संस्कृतनिष्ठ और प्रांजल भाषा में गम्भीरता के साथ सुबोधता, प्रवाह और लालित्य विद्यमान है।

(ब) शैलीगत विशेषताएँ—इनकी शैली की विविध विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) विचारप्रधानता (विचारप्रधान शैली)
(2) गवेषणात्मकता (गवेषणात्मक शैली)
(3) व्याख्यात्मकता (व्याख्यात्मक शैली)
(4) उद्धरणों का प्रयोग (उद्धरण शैली)।

(ii) पं० दीनदयाल उपाध्याय

जीवन-परिचय—प्रखर विचारक और भारतीय संस्कृति के उपासक पं० दीनदयाल उपाध्याय का जन्म **25 सितम्बर, 1916 ई०** को मथुरा जिले के **नगला चन्द्रभान** नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम **भगवतीप्रसाद** और माता का नाम **रामप्यारी** था। इनके प्रपितामह **पण्डित हरिराम उपाध्याय** अपने समय के प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इनकी माता अत्यन्त कर्त्तव्य-परायण महिला थीं। इनके पिता भगवतीप्रसाद जलेसर में सहायक स्टेशन मास्टर थे। अपनी पारिवारिक परिस्थितियों के कारण मात्र ढाई वर्ष की आयु में ये अपनी माता और भाई के साथ अपने नाना के यहाँ आ गए। कुछ दिनों पश्चात् इनके पिता की मृत्यु हो गई। इनकी आयु अभी सात वर्ष की ही थी कि इनकी माता रामप्यारी का भी क्षयरोग से देहान्त हो गया। इन्होंने दसवीं की परीक्षा सीना के कल्याण हाईस्कूल से दी और पूरे बोर्ड में प्रथम स्थान पाकर तत्कालीन सीना के महाराजा कल्याण सिंह से स्वर्णपदक, छात्रवृत्ति और पुस्तकों के लिए 250 रुपये प्राप्त किए। इण्टरमीडिएट की परीक्षा इन्होंने पिलानी के बिरला कॉलेज से दी और इसमें भी इन्होंने पूरे बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इन्होंने बी०ए० की परीक्षा सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर और एम०ए० पूर्वार्द्ध की परीक्षा अंग्रेजी विषय से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। अपनी ममेरी बहन की बीमारी के कारण ये एम०ए० अंग्रेजी उत्तरार्द्ध की परीक्षा नहीं दे सके। इसके बाद ये प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में बैठे और उत्तीर्ण होकर कुछ दिन इन्होंने प्रशासनिक पद पर अपनी सेवाएँ दीं। इसके बाद इन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय हो गए। जब ये पिलानी में थे तो वहाँ अध्ययन करते हुए ही इन्होंने पढ़ाई में कमजोर छात्रों के लिए **'जीरो एसोसिएशन'** का गठन करके उन छात्रों को पढ़ाने की व्यवस्था की। ये राजनीति में भारतीयता और संस्कृति के समावेश के प्रबल समर्थक थे। अपनी इसी वैचारिक प्रखरता के कारण अनेक लोग इनसे मन-ही-मन द्वेष रखने लगे। इनके लिए यह वैचारिक विद्वेष प्राणघातक सिद्ध हुआ और लखनऊ से पटना की रेलयात्रा के दौरान **11 फरवरी, 1968 ई०** को प्रातःकाल चार बजे मुगलसराय स्टेशन के पास रेलवे लाइन पर ये घायलावस्था में मृत पाए गए।

भाषा-शैली—उपाध्यायजी की भाषा-शैली की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(अ) भाषागत विशेषताएँ—पं० दीनदयाल उपाध्याय जमीन से जुड़े विचारक और समाज-सेवी व्यक्ति थे, इसीलिए इन्होंने अपनी रचनाओं में जनसाधारण के साथ सहजता से संवाद स्थापित करने के लिए आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया। ग्रामीण जनता तक पहुँच बनाने के लिए वे अपना मूल समाचार और वक्तव्य हिन्दी में लिखते थे। इनका अंग्रेजी से कोई बैर नहीं था, परन्तु वे चाहते थे कि मुख्य रूप से भारतीय भाषाओं पर अधिक-से-अधिक ध्यान दिया जाए। ये हिन्दीसहित सभी भारतीय भाषाओं की आजादी के पक्षधर थे। साथ ही यह भी चाहते थे कि विधिशस्त्र, विज्ञान एवं अन्य तकनीकी विषयों के लिए हिन्दी में नए-नए शब्दों का निर्माण किया जाए।

(ब) शैलीगत विशेषताएँ—पं० दीनदयालजी ने अनेक विषयों पर आधारित निबन्धों की रचना की है। इन सभी में उन्होंने विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। इनमें से प्रमुख शैलियों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है—

(1) विचारात्मक शैली—पं० दीनदयालजी ने अधिकांशतः गम्भीर और चिन्तनपूर्ण विषयों पर ही लेखनी चलाई है, इसी कारण उनकी शैली विशेषतः विचारप्रधान ही है। उनके द्वारा प्रयुक्त इस शैली की भाषा गम्भीर और परिमार्जित है।

(2) प्रश्नात्मक शैली—व्यवस्था में जवाबदेही तय करते समय इनकी शैली प्रश्नात्मक भी हो गई है। इनकी इस शैली में इनके गम्भीर चिन्तन का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

(3) उद्धरण शैली—उपाध्यायजी का अध्ययन अत्यन्त व्यापक और गहन था। इसी कारण उन्होंने अनेक स्थलों पर हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत के उद्धरणों का प्रयोग भी किया है।

(4) आलोचनात्मक शैली—आलोचनात्मक साहित्य के सृजन की दृष्टि से पं० दीनदयालजी का हिन्दी-साहित्य-जगत् में अपना विशिष्ट स्थान है। उनकी आलोचनात्मक शैली में उनकी विद्वत्ता और अध्ययनशीलता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

(5) विवेचनात्मक शैली—विषयानुसार जहाँ भी आवश्यकता हुई है, वहाँ उन्होंने बड़े ही तार्किक और अकाट्य रूप में विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया है। इस शैली में जीवन और संसार के प्रति उनके व्यापक दृष्टिकोण का परिचय प्राप्त होता है।

(iii) डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

जीवन-परिचय—बहुमुखी प्रतिभा के धनी और आधुनिक भारत के विकास को एक नया आयाम देनेवाले डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 ई० को तमिलनाडु राज्य के एक मध्यमवर्गीय मुस्लिम परिवार में रामेश्वरम् के पास स्थित धनुषकोडी गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम जैनुलाबदीन और माता का नाम आशिमा (अशिअम्मा) था। इनका पूरा नाम अबुल पाकिर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम था। संयुक्त परिवारवाले इनके घर की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी न थी। पाँच वर्ष की आयु में रामेश्वरम् के पंचायती प्राथमिक विद्यालय में शिक्षा के लिए इनका नाम लिखवाया गया। आर्थिक अभावों के कारण इनका जीवन बड़ा संघर्षमय रहा, इसलिए इन्हें अपनी आरम्भिक शिक्षा जारी रखने के लिए अपने चचेरे भाई के साथ अखबार बाँटने का कार्य करना पड़ा। अत्यधिक परिश्रमी और अपनी धुन के पक्के कलाम को आरम्भिक शिक्षा के बाद घर छोड़कर रामनाथपुरम् आकर यहाँ के श्वार्ट्ज हाईस्कूल में दाखिला लेना पड़ा; इसके पश्चात् इन्होंने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एम० आई० टी०) की छह सौ रुपये फीस भरकर इंजीनियरिंग में दाखिला लिया। अब्दुल कलाम ने अपनी मेहनत के बल पर एम० आई० टी० की छात्रवृत्ति प्राप्त की। यहाँ से इन्होंने अन्तरिक्ष विज्ञान में स्नातक (इंजीनियरिंग) की उपाधि सफलतापूर्वक प्राप्त की।

स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त डॉ० कलाम ने हावरक्रॉफ्ट परियोजना पर कार्य करने हेतु भारतीय रक्षा अनुसन्धान एवं विकास संस्थान में प्रवेश लिया। 1962 ई० में उन्होंने भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन में पदार्पण किया। यहाँ अब्दुल कलाम ने कई उपग्रह प्रक्षेपण परियोजनाओं में अपनी भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वाह किया। एक परियोजना निदेशक के रूप में भारत के सर्वप्रथम स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान एस० एल० वी-3 के निर्माण में भी इनकी स्मरणीय भूमिका रही। इसी के फलस्वरूप 1982 ई० में अन्तरिक्ष में रोहिणी उपग्रह का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण सम्भव हो सका। डॉ० कलाम ने स्वदेशी लक्ष-भेदी नियन्त्रित प्रक्षेपास्त्र (गाइडेड मिसाइल्स) को डिजाइन किया तथा 'अग्नि' और 'पृथ्वी' जैसे प्रक्षेपास्त्रों का निर्माण स्वदेशी तकनीक के आधार पर किया। ये जुलाई 1992 से दिसम्बर 1999 तक तत्कालीन रक्षामन्त्री के विज्ञान सलाहकार एवं सुरक्षा-शोध व विकास विभाग के सचिव रहे। इनके नेतृत्व व पर्यवेक्षण में ही 1998 में राजस्थान के पोखरण क्षेत्र में दूसरा सफल परमाणु परीक्षण किया गया, जिसके

© CHITRA PRAKASHAN

परिणामस्वरूप ही भारत परमाणु शक्ति से सम्पन्न राष्ट्रों की सूची में सम्मिलित हो सका।
18 जुलाई, 2002 ई० को डॉ० अब्दुल कलाम भारत के राष्ट्रपति चुने गए। 25 जुलाई, 2002 ई० को संसद भवन के अशोक कक्ष में डॉ० अब्दुल कलाम को भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति के रूप में राष्ट्रपति पद की शपथ दिलाई गई। यद्यपि अब्दुल कलाम राजनैतिक क्षेत्र के व्यक्ति नहीं थे, लेकिन अपनी राष्ट्रवादी विचारधारा और राष्ट्रपति बनने के उपरान्त भारत की कल्याण सम्बन्धी नीतियों में रुचि लेने के कारण इन्हें एक सफल राजनीतिज्ञ माना जा सकता है।
राष्ट्रपति पद से मुक्त होने के उपरान्त डॉ० कलाम भारतीय प्रबन्धन संस्थान, शिलाँग; भारतीय प्रबन्धन संस्थान, इन्दौर व भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर के मानद फैलो और विजिटिंग प्रोफेसर बन गए।
मई 2012 ई० में अब्दुल कलाम ने भारत के युवाओं के लिए भ्रष्टाचार दूर करने हेतु 'मैं आन्दोलन को क्या दे सकता हूँ' शीर्षक से एक कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। ये सारे देश में अनेक स्थानों पर जाकर विशेषत: युवाओं को उत्साहित व पथ-प्रदर्शित करते रहे।
27 जुलाई, 2015 ई० की सायंकाल अब्दुल कलाम भारतीय प्रबन्धन संस्थान, शिलाँग में 'रहने योग्य ग्रह' प्रकरण पर एक व्याख्यान दे रहे थे। अपने व्याख्यान के अनन्तर ही इन्हें दिल का दौरा पड़ा। इससे इनका निधन हो गया। इस प्रकार एक महान् राष्ट्रवादी, मानवतावादी, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, समाज-सेवी व साहित्यकार तथा भारत के बच्चों और युवाओं के मन-मस्तिष्क में बसा वह 'मिसाइलमैन' सदैव के लिए हमसे विदा लेकर न जाने कहाँ चला गया।
डॉ० कलाम को अपने सराहनीय योगदान के लिए सन् 1997 ई० में देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त भी इन्हें देश के कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए।
भाषा-शैली—अब्दुल कलाम की भाषा-शैली पर आधारित प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार है—
(अ) भाषागत विशेषताएँ—डॉ० कलाम ने अनेक महत्त्वपूर्ण लेखों और आत्मकथाओं की रचना करने के साथ ही अनेक कविताओं का भी सृजन किया। इसी कारण उनकी भाषा अनेक स्थलों पर आलंकारिक हो गई है। इसमें उनकी भावात्मकता के स्पष्ट दर्शन होते हैं। इनकी भाषा सामान्यत: शुद्ध और परिष्कृत साहित्यिक खड़ीबोली है। उनकी भाषा सरल, प्रवाहमय और बोधगम्य है। उन्होंने अपनी सहज एवं स्वाभाविक भाषा का प्रयोग विषयानुसार ही किया है। उन्होंने न केवल अंग्रेजी भाषा में, वरन् तमिल भाषा में भी साहित्य-सृजन किया है। यही कारण है कि उन्होंने अपनी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग किया है। भाषा में हिन्दी के साथ ही विशेष रूप से उर्दू की शब्दावली का प्रयोग सर्वाधिक परिलक्षित होता है।
(ब) शैलीगत विशेषताएँ—अब्दुल कलाम ने अनेक विषयों पर आधारित निबन्धों की रचना की है। इन सभी में उन्होंने विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। इनमें से प्रमुख शैलियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—
(1) विचारात्मक (चिन्तनपरक) शैली—डॉ० कलाम ने विचारात्मक या चिन्तनपरक शैली में ही अपनी सर्वाधिक रचनाओं का सृजन किया है। इस शैली की भाषा गम्भीर और परिमार्जित है।
(2) आत्मकथात्मक शैली—डॉ० कलाम की इस शैली में चित्रात्मकता व भावात्मकता के दर्शन होते हैं। इस शैली का प्रयोग करते हुए उनकी गम्भीरता और दार्शनिक विचारशीलता का परिचय भी प्राप्त हुआ है।
(3) भावात्मक शैली—कविताओं की रचना करते समय उन्होंने भावात्मक शैली का हृदयस्पर्शी प्रयोग किया है। इस शैली में भाव-सौन्दर्य के साथ ही आलंकारिक सौन्दर्य के भी दर्शन होते हैं।
(4) प्रश्नात्मक शैली—एक ईमानदार अन्वेषक और सत्य के खोजी कलाम ने अपने विचारों को प्रस्तुत करते समय कहीं-कहीं प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग भी किया है।
(5) उद्धरण शैली—अब्दुल कलाम का अध्ययन अत्यन्त व्यापक और गहन था। अपनी बात की पुष्टि हेतु उन्होंने अनेक स्थलों पर विभिन्न शास्त्रों अथवा महापुरुषों के उद्धरण दिए हैं।

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए— 3 + 2 = 5
(i) महादेवी वर्मा (ii) सुमित्रानन्दन पन्त
(iii) रामधारीसिंह 'दिनकर'।

उत्तर :

(i) महादेवी वर्मा

जीवन-परिचय—'पीड़ा की गायिका' अथवा 'आधुनिक युग की मीरा' के नाम से विख्यात श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म **सन् 1907 ई० (संवत् 1964)** में उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध नगर फर्रुखाबाद में होलिका-दहन के पुण्य पर्व के दिन हुआ था। इनकी माता **हेमरानी** साधारण कवयित्री थीं। वे श्रीकृष्ण में अटूट श्रद्धा रखती थीं। इनके नाना भी ब्रजभाषा में कविता करते थे। नाना एवं माता के इन गुणों का महादेवीजी पर भी प्रभाव पड़ा। नौ वर्ष की छोटी उम्र में ही इनका विवाह **स्वरूपनारायण वर्मा** से हो गया था; किन्तु इन्हीं दिनों इनकी माता का भी स्वर्गवास हो गया। माँ का साया सिर से उठ जाने पर भी इन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा तथा पढ़ने में और अधिक मन लगाया। परिणामस्वरूप इन्होंने मैट्रिक से लेकर एम०ए० तक की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। बहुत समय तक ये 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' में प्रधानाचार्या के पद पर कार्यरत रहीं।
महादेवीजी का स्वर्गवास 80 वर्ष की अवस्था में **11 सितम्बर, सन् 1987 ई० (संवत् 2044)** को हो गया।
रचनाएँ—महादेवीजी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—
(1) नीहार—इस काव्य-संकलन में भावमय गीत संकलित हैं। उनमें वेदना का स्वर मुखरित हुआ है।
(2) रश्मि—इस संग्रह में आत्मा-परमात्मा के मधुर सम्बन्धों पर आधारित गीत संकलित हैं।
(3) नीरजा—इसमें प्रकृतिप्रधान गीत संकलित हैं। इन गीतों में सुख-दु:ख की अनुभूतियों को वाणी मिली है।
(4) सान्ध्यगीत—इसके गीतों में परमात्मा से मिलन का आनन्दमय चित्रण है।
(5) दीपशिखा—इसमें रहस्यभावनाप्रधान गीतों को संकलित किया गया है।
इनके अतिरिक्त 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'शृंखला की कड़ियाँ' आदि इनकी गद्य-रचनाएँ हैं। 'यामा' नाम से इनके विशिष्ट गीतों का संग्रह प्रकाशित हुआ है। 'सन्धिनी' और 'आधुनिक कवि' भी इनके गीतों के संग्रह हैं।

(ii) सुमित्रानन्दन पन्त

जीवन-परिचय—प्रकृति-चित्रण के अमर गायक कविवर सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म **20 मई, सन् 1900 ई० (संवत् 1957)** को अल्मोड़ा के निकट कौसानी नामक ग्राम में हुआ था। जन्म के 6 घण्टे के बाद ही इनकी माता का देहान्त हो गया। पिता तथा दादी के वात्सल्य की छाया में इनका प्रारम्भिक लालन-पालन हुआ। पन्तजी ने सात वर्ष की अवस्था से ही काव्य-रचना आरम्भ कर दी थी। पन्तजी की शिक्षा का पहला चरण अल्मोड़ा में पूरा हुआ। यहीं पर उन्होंने अपना नाम गुसाईंदत्त से बदलकर सुमित्रानन्दन रख लिया। सन् 1919 ई० में पन्तजी अपने मँझले भाई के साथ बनारस चले आए। यहाँ पर उन्होंने क्वीन्स कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की। सन् 1950 ई० में वे 'ऑल इण्डिया रेडियो' के परामर्शदाता के पद पर नियुक्त हुए और सन् 1957 ई० तक वे प्रत्यक्ष रूप से रेडियो से सम्बद्ध रहे। सरस्वती के इस पुजारी ने **28 दिसम्बर, सन् 1977 ई० (संवत् 2034)** को इस भौतिक संसार से सदैव के लिए विदा ले ली।
रचनाएँ—पन्तजी बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यकार थे। अपने विस्तृत साहित्यिक जीवन में उन्होंने विविध विधाओं में साहित्य-रचना की। उनकी प्रमुख रचनाओं का विवरण अग्र प्रकार है—

© CHITRA PRAKASHAN

(1) लोकायतन—इस महाकाव्य में कवि की सांस्कृतिक और दार्शनिक विचारधारा व्यक्त हुई है। इस रचना में कवि ने ग्राम्य-जीवन और जन-भावना को छन्दोबद्ध किया है।

(2) वीणा—इस रचना में पन्तजी के प्रारम्भिक प्रकृति के अलौकिक सौन्दर्य से पूर्ण गीत संगृहीत हैं।

(3) पल्लव—इस संग्रह में प्रेम, प्रकृति और सौन्दर्य के व्यापक चित्र प्रस्तुत किए गए हैं।

(4) गुंजन—इसमें प्रकृति-प्रेम और सौन्दर्य से सम्बन्धित गम्भीर एवं प्रौढ़ रचनाएँ संकलित की गई हैं।

(5) ग्रन्थि—इस काव्य-संग्रह में वियोग का स्वर प्रमुख रूप से मुखरित हुआ है। प्रकृति यहाँ भी कवि की सहचरी रही है।

(6) अन्य कृतियाँ—'स्वर्णधूलि', 'स्वर्ण-किरण', 'युगपथ', 'उत्तरा' तथा 'अतिमा' आदि में पन्तजी महर्षि अरविन्द के नवचेतनावाद से प्रभावित हैं। 'युगान्त', 'युगवाणी' और 'ग्राम्या' में कवि समाजवाद और भौतिक दर्शन की ओर उन्मुख हुआ है। इन रचनाओं में कवि ने दीन-हीन और शोषित वर्ग को अपने काव्य का आधार बनाया है।

(iii) रामधारीसिंह 'दिनकर'

जीवन-परिचय—जन-चेतना के गायक और क्रान्तिकारी कवि रामधारीसिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार प्रान्त के सिमरिया, जिला बेगूसराय (पुराना जिला मुंगेर) में, **सन् 1908 ई०** में हुआ था। इन्होंने बी०ए० तक शिक्षा ग्रहण की। इसके पश्चात् इन्होंने एक माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाचार्य के रूप में कार्य किया। तत्पश्चात् इन्होंने बिहार सरकार के सब-रजिस्ट्रार एवं प्रचार विभाग के उपनिदेशक, मुजफ्फरपुर के एक कॉलेज में हिन्दी-विभागाध्यक्ष, 'भागलपुर विश्वविद्यालय' के कुलपति तथा भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार के रूप में कार्य किया। वे राज्यसभा के मनोनीत सदस्य भी रहे। **सन् 1974 ई०** में इस काव्य मनीषी का देहान्त हो गया।

रचनाएँ—दिनकरजी मूलतः सामाजिक चेतना के कवि थे। इनके व्यक्तित्व की छाप इनकी प्रत्येक रचना में दृष्टिगोचर होती है। इनकी प्रमुख काव्य-रचनाओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

(1) रेणुका—इस कृति में अतीत के गौरव के प्रति कवि का आदर-भाव तथा वर्तमान की नीरसता से दु:खी मन की वेदना का परिचय मिलता है।

(2) हुंकार—इस काव्य-रचना में वर्तमान दशा के प्रति आक्रोश व्यक्त हुआ है।

(3) रसवन्ती—इस रचना में सौन्दर्य का काव्यमय वर्णन हुआ है।

(4) सामधेनी—इसमें सामाजिक चेतना, स्वदेश-प्रेम तथा विश्व-वेदना सम्बन्धी कविताएँ संकलित हैं।

(5) कुरुक्षेत्र—इसमें 'महाभारत' के 'शान्ति-पर्व' के कथानक को आधार बनाकर वर्तमान परिस्थितियों का चित्रण किया गया है।

(6) उर्वशी, रश्मिरथी—इन दोनों काव्य-कृतियों में विचार-तत्त्व की प्रधानता है। ये दिनकर के प्रसिद्ध प्रबन्ध-काव्य हैं।

दिनकरजी की गद्य-रचनाओं में इनका विराट् ग्रन्थ 'संस्कृति के चार अध्याय' उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त इन्होंने कई समीक्षात्मक ग्रन्थ भी लिखे हैं।

6. 'पंचलाइट' अथवा 'कर्मनाशा की हार' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए। **5**

उत्तर :

'पंचलाइट' कहानी के प्रमुख पात्र गोधन का चरित्र-चित्रण

गोधन 'पंचलाइट' कहानी का सर्वप्रमुख पात्र और उसका नायक है। उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं—

(1) भोला-भाला अल्हड़ ग्रामीण युवा—गोधन महतो टोले का भोला-भाला अल्हड़ ग्रामीण युवा है। उसकी अल्हड़ता का आलम यह है कि वह पंचायत के तमाम विरोध के बाद भी सिनेमा का गाना—'हम तुमसे मोहब्बत करके सलम' गाना नहीं छोड़ता। उसके इस अल्हड़पन की उसे सजा भी मिलती है। गाँव की पंचायत सजा के रूप में उस पर दस रुपया जुर्माना करती है और उसका हुक्का-पानी भी बन्द कर देती है।

(2) चतुर और होशियार—गोधन ग्रामीण होते हुए भी बहुत चतुर और होशियार है। इसका प्रमाण यही है कि सम्पूर्ण महतो टोले में वही एक ऐसा व्यक्ति है, जो पेट्रोमैक्स जलाना जानता है। उसकी चतुराई का प्रमाण यह भी है कि जब टोले के सामने पंचलाइट जलाने की समस्या उठ खड़ी होती है तो वह अपनी प्रेमिका मुनरी को यह बात बता देता है कि वह पेट्रोमैक्स जलाना जानता है। मुनरी उसकी इस बात को पंचायत तक पहुँचा भी देती है। पंचायत उसकी होशियारी पर मुग्ध है, इसका वर्णन कहानीकार ने इस रूप में किया है—**उपस्थित जन-समूह में फिर मायूसी छा गई। लेकिन, गोधन बड़ा होशियार लड़का है। बिना इसपिरिट के ही पंचलैट जलाएगा।......लोगों के दिल का मैल दूर हो गया। गोधन बड़ा काबिल लड़का है।"**

(3) मानी—गोधन बड़ा मानी युवा है। पंचायत के हुक्का-पानी बन्द किए जाने को उसने अपना अपमान समझा, इसलिए वह पंचायत द्वारा पंचलैट जलाने के लिए बुलाए जाने पर वहाँ जाने से मना कर देता है और छड़ीदार से व्यंग्यपूर्वक कहता है—**"पंचों की क्या परतीत है? कोई कल-कब्जा बिगड़ गया तो मुझे दण्ड-जुरमाना भरना पड़ेगा।"** जिस मुनरी काकी के कहने पर उसे सजा सुनाई गई थी, उसी के मनाने पर वह पंचलैट जलाने के लिए आता है।

(4) समाज की प्रतिष्ठा के प्रति संवेदनशील—गोधन अपने समाज की मान-प्रतिष्ठा के प्रति अत्यन्त संवेदनशील है। पंचायत ने उस पर दस रुपये जुर्माना किया है और उसका हुक्का-पानी भी बन्द कर दिया है, किन्तु जब उसी पंचायत और समाज की प्रतिष्ठा पर बन आई तो वह अपने पूर्व के अपमान को भुलाकर पंचलैट जलाने के लिए तैयार हो जाता है और बिना स्प्रिट के भी पंचलैट जलाकर अपने समाज, जाति और पंचायत की मान-प्रतिष्ठा की रक्षा करता है।

इस प्रकार कहानीकार ने गोधन को एक प्रगतिशील जनहितकारी युवा के रूप में प्रस्तुत करके यह सन्देश दिया है कि व्यक्तिगत मान-प्रतिष्ठा से देश, जाति और समाज की प्रतिष्ठा कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है और व्यक्ति को सब प्रकार से उसकी रक्षा करनी चाहिए।

अथवा

'कर्मनाशा की हार' कहानी के प्रमुख पात्र भैरो पाण्डे का चरित्र-चित्रण

'कर्मनाशा की हार' कहानी के आधार पर भैरो पाण्डे के चरित्र में निम्नांकित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं—

(1) कर्त्तव्यनिष्ठ एवं आदर्शवादी—भैरो पाण्डे पुरानी पीढ़ी के आदर्शवादी व्यक्ति हैं। पैर से पंगु होते हुए भी उनकी क्रियाशीलता किसी से कम नहीं। भैरो पाण्डे सारे दिन काम में लगे रहकर जो कुछ कमाते हैं, अपने भाई की शिक्षा आदि पर खर्च कर देते हैं।

(2) विचारशील—भैरो पाण्डे गम्भीर, सच्चरित्र और विचारशील व्यक्तित्व के धनी हैं। फुलमत और अपने भाई कुलदीप के परस्पर टकरा जाने पर उन्होंने इतनी तीखी दृष्टि से दोनों को देखा था कि दोनों ही भय से काँपकर इधर-उधर भाग खड़े हुए।

(3) आदर्श भाई—भैरो पाण्डे को अपने भाई के प्रति अपार स्नेह था। जब कुलदीप केवल दो वर्ष का था कि माँ-बाप की मृत्यु हो गई और दुधमुँहे भाई की देख-रेख का भार उनके कन्धों पर आ गया। उन्होंने बहुत प्यार से कुलदीप का पालन-पोषण किया।

फुलमत से प्रेम हो जाने के बाद कुलदीप भैरो पाण्डे से भयभीत होकर कहीं भाग गया। ऐसी स्थिति में पाण्डे के हृदय में उसके प्रति आक्रोश तो है, परन्तु दु:ख के सागर में डूबकर भी वे कुलदीप के सम्बन्ध में ही सोचते हैं—**'राम जाने कैसे हो' सूखी आँखों से दो बूँदें गिर पड़ीं, 'अपने से तो कौर भी नहीं उठ पाता था, भूखा बैठा होगा कहीं, बैठे—मरे, हम क्या करें।'**

© CHITRA PRAKASHAN

(4) मानवतावादी व्यक्तित्व—पाण्डे मानवतावादी और मर्यादावादी भावनाओं से परिपूर्ण हैं। एक ओर उनमें मर्यादा की रक्षा हेतु उत्पन्न होनेवाली भावनाएँ फुलमत को अपने वंश का अंग बनने से रोकती हैं तो दूसरी ओर मानवतावादी दृष्टि उसे अपना लेने के लिए प्रेरित करती है। अन्त में मर्यादा-भाव पर मानवतावादी भाव विजयी हो जाता है। तब वे कह उठते हैं—''......... **कुलदीप कायर हो सकता है, वह अपने बहू-बच्चे को छोड़कर भाग सकता है, किन्तु मैं कायर नहीं हूँ; मेरे जीते-जी बच्चे और उसकी माँ का कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता .... समझे।**''

और वे इसी के साथ फुलमत को स्वीकार कर लेते हैं।

(5) साहसी एवं निर्भीक—पाण्डे साहसी और निर्भीक विचारों के व्यक्ति हैं। मुखिया के द्वारा यह कहे जाने पर कि समाज का दण्ड तो झेलना ही होगा, पाण्डे भयभीत नहीं होते। वह बड़े साहस और निर्भीकता के साथ कहते हैं—''**जरूर भोगना होगा मुखियाजी .... मैं आपके समाज को कर्मनाशा से कम नहीं समझता। किन्तु मैं एक-एक के पाप गिनाने लगूँ, तो यहाँ खड़े सारे लोगों को परिवार समेत कर्मनाशा के पेट में जाना पड़ेगा .... है कोई तैयार जाने को .... ?**''

(6) प्रगतिशील—पाण्डे प्रगतिशील विचारों के पोषक हैं; अत: वे अन्धविश्वासों का खण्डन करते हुए रूढ़िवादिता का विरोध करने को तत्पर हो जाते हैं। वह स्पष्ट शब्दों में घोषणा करते हैं—''....... **कर्मनाशा की बाढ़ दुधमुँहे बच्चे और एक अबला की बलि देने से नहीं रुकेगी, उसके लिए तुम्हें पसीना बहाकर बाँधों को ठीक करना होगा ....।**''

इस प्रकार कहानीकार ने भैरो पाण्डे को आदर्शवादी, मानवतावादी, गम्भीर, सच्चरित्र, विचारशील, साहसी और निर्भीक व्यक्ति के रूप में चित्रित कर रूढ़िवादिता को समाप्त करने का सन्देश दिया है।

अथवा

कहानी तत्त्वों के आधार पर 'खून का रिश्ता' अथवा 'बहादुर' कहानी की समीक्षा कीजिए।

उत्तर :

'खून का रिश्ता' की तात्त्विक समीक्षा

वर्तमान समाज में दरकते रिश्तों की वास्तविकता का बखान करनेवाली कहानी 'खून का रिश्ता' का तात्त्विक विवेचन निम्न प्रकार है—

(1) कथानक—बाबूजी के आधुनिक पुत्र वीरजी अपनी सगाई मात्र सवा एक रुपया में ही सम्पन्न कराने हेतु कटिबद्ध हैं तथा लड़की के यहाँ केवल एक व्यक्ति को जाना पर्याप्त समझते हैं। इस विषय को लेकर वीरजी के माता-पिता चिन्तित हैं, वे अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार पूरी लाव-लश्कर के साथ समधी के द्वार पर जाना चाहते हैं। वीरजी के चाचा मंगलसेन सेवानिवृत्त वृद्ध एवं विकलांग होते हुए भी इस अवसर पर पूर्ण सम्मान प्राप्त करने के लिए उतावले हैं, लेकिन उनकी भाभी, भाई और नौकर तक उनकी उपस्थिति को अपनी तौहीन समझते हैं।

मंगलसेन को सगाई में भेजने के लिए विवश भाभी ने उसके लिए अपनी पुत्री मनोरमा से धुला हुआ पाजामा निकलवाया। बाबूजी से उनके लिए एक पगड़ी भी दिलाई। जूतों में पॉलिश भी की गई। इस प्रकार मंगलसेन का कायाकल्प किया गया। बाबूजी और मंगलसेन लड़की के पिता के घर जाकर सगाई की रस्म पूरी करके वापस आ गए। मंगलसेन का स्वप्न साकार हुआ।

समधी के घर से प्राप्त सामानों में चाँदी की तीन कटोरी और दो चम्मच देखकर वीरजी की माँ का पारा गरम हो गया। उनका माथा ठनका। उन्हें सन्देह हुआ कि मंगलसेन ने एक चाँदी की चम्मच में अवश्य हेराफेरी की है; फलत: उन्हें दण्डित करने की बाबूजी ने धमकी भी दी। दैवयोग से वीरजी का साला उसी समय आ पहुँचा और उसने चमकती हुई चाँदी की एक चम्मच मनोरमा को दी और तुरन्त वापस चला गया। इस प्रकार मंगलसेन पर लगा आरोप निराधार सिद्ध हुआ। मंगलसेन ने कहा कि मैं बाजी जीत गया हूँ। नौकर भी खुश हुआ। खून का रिश्ता टूटते-टूटते जुड़ा रह गया।

इस प्रकार कहानी का कथानक प्रभावोत्पादक, विचारोत्तेजक एवं जीवन के यथार्थ से सम्बद्ध है। कहानी का श्रीगणेश आवश्यकतापरक है; अर्थात् खून के रिश्ते की गर्जमंदी है। कथानक सुदृढ़ होकर अग्रसरित हुआ है और अपने अन्तिम पड़ाव में विश्वास और खून के रिश्ते में संदेह-भाव ग्रहण करता है, लेकिन कहानी का अन्त सभी पात्रों के चरित्रों एवं कहानी के उद्देश्य को यथार्थ धरातल पर ला देता है। मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का उन्मूलन कर देना कहानीकार साहनी की चिन्तन-कला का अद्‌भुत गुण है। 'खून का रिश्ता' कहानी में आद्योपान्त एकोन्मुखता दृष्टिगत होती है। कथानक में तारतम्यता एवं सजीवता सर्वत्र विद्यमान है।

शीर्षक—कहानी के आरम्भ से अन्त तक वर्तमान समाज में रिश्तों में आती दरार और उनके बिगड़ते-बनते समीकरणों का विवेचन किया गया है। कहानी में पुत्र वीरजी माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध अपनी सगाई में सवा रुपया लेने और केवल एक आदमी के भेजने की जिद पर अड़ा है। खून के रिश्ते की लाज रखते हुए तुनकमिजाज बाबूजी को बेटे की बात माननी पड़ती है। मंगलसेन के खून के रिश्ते को बेइज्जत होते देख वीरजी का हृदय टूक-टूक होता है और वह उस रिश्ते की रक्षा के लिए मंगलसेन को सगाई में भेजकर ही दम लेता है। चाँदी की चम्मच की चोरी के आरोप में एकबार फिर से 'खून के रिश्ते' का खून होता लगता है, किन्तु उसी समय वीरजी का साला वह चम्मच लेकर उपस्थित होता है और खून का रिश्ता एक बार फिर से दागदार होने से बच जाता है। मंगलसेन भी 'खून के रिश्ते' का लिहाज रखते हुए अपनी बेइज्जती को भूल जाता है। इस प्रकार कहानी का 'खून का रिश्ता' शीर्षक अत्यन्त सार्थक और उपयुक्त है।

(2) पात्र और चरित्र-चित्रण—'खून का रिश्ता' कहानी में मानवीय सामाजिक और पारिवारिक सम्बन्धों का विवेचन किया गया है, इसलिए इसमें सभी पात्रों के चरित्रों को विशेष रूप से सँवारा गया है। एक प्रकार से यह भाव और चरित्रप्रधान कहानी हैं। आलोच्य कहानी में मानव चरित्र की प्रतिष्ठा ही मुख्य विषय है। कहानी में **वीरजी** को प्रमुख पात्र के रूप में प्रस्तुतकर कहानीकार ने लक्ष्यसिद्धि का संकल्प लिया है। स्वतन्त्र भारत देश में भारतीय समाज की स्वतन्त्र चिन्तन शैली की आवश्यकता को पात्रों के चरित्र-चित्रण के माध्यम से उजागर किया गया है। प्रमुख पात्र वीरजी अपनी भावी जिन्दगी को सँवारने के लिए दहेजरहित विवाह का विस्मयकारी निर्णय लेता है और उसमें सफल भी होता है। वीरजी की **माँ** में एक स्वस्थ गृहिणी का चरित्रांकन है, जिसका चरित्र परिस्थितियों के साथ-साथ विकास पाता हुआ बहुव्यक्तित्ववादी ही सिद्ध होता है। वह कभी खून के रिश्ते की गरिमा को साकार रूप देती है तो कभी उसी पात्र **मंगलसेन** की उपेक्षा भी करती है। कहानी में चरित्र की सूक्ष्मता और चारित्रिक भंगिमाओं का वैविध्य दर्शनीय है। कहानी में पात्रों की यथार्थता को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। चरित्र-चित्रण में विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

(3) कथोपकथन अथवा संवाद—आलोच्य कहानी के कथोपकथन अथवा संवाद पूर्ण नियन्त्रित, चमत्कारयुक्त एवं लघुकाय हैं। जिज्ञासा और कौतूहल को उजागर करनेवाले संवाद कहानी में सर्वत्र प्रयुक्त हुए हैं। साहनीजी ने इस कहानी में मुहावरों का प्रयोग करके संवादों को उत्कृष्ट बनाया है। कथोपकथनों में विचारों का विश्लेषणात्मक रूप प्रयुक्त हुआ है। कहानी के संवाद अत्यन्त चुटीले, कथानक को गतिशील बनानेवाले और पात्रों के चरित्रों को उजागर करनेवाले हैं। पुत्र वीरजी के दहेज-विरोधी और माँ और पिता के क्षुब्ध वात्सल्यपूर्ण चरित्र का उद्घाटन करनेवाले ये दो संवाद यहाँ द्रष्टव्य हैं—

''मैंने कह दिया, माँ, मेरी सगाई सवा रुपये में होगी और केवल बाबूजी सगाई डलवाने जायेंगे। जो मंजूर नहीं हो तो अभी से....''

''बस-बस, आगे कुछ मत कहना!'' माँ ने झट से टोकते हुए कहा। फिर क्षुब्ध होकर बोली, ''जो तुम्हारे मन में आये करो। आजकल कौन किसी की सुनता है! छोटा-सा परिवार और इसमें भी कभी कोई काम ढंग से नहीं हुआ। मुझे तो पहले ही मालूम था, तुम अपनी करोगे····''

© CHITRA PRAKASHAN

''अपनी क्यों करेगा, मैं कान खींचकर इसे मनवा लूँगा!'' बाबूजी ने बेटे की ओर देखते हुए बड़े दुलार से कहा।

प्रभावपूर्ण संक्षिप्त कथोपकथनों के प्रयोग के कारण कहानी में नाटकीयता का पुट आ गया है, जिस कारण कहानी अत्यन्त रोचक और भावपूर्ण हो उठी है। कहानी में नाटकीयता का समावेश करते ये संवाद देखिए—

इतने में माँजी की याद आयी, ''तीन कटोरियाँ और दो चम्मच? यह क्या हिसाब हुआ? क्या तीन चम्मच नहीं दिये समधियों ने?'' फिर बाबूजी के कमरे की ओर मुँह करके बोलीं, ''अजी सुनते हो! तुम भी कैसे हो, आज के दिन भी कोई अन्दर जा बैठता है?''

''क्या है?'' बाबूजी ने अन्दर से ही पूछा।

''कुछ बताओ तो सही, समधियों ने क्या कुछ दिया है?''

''बस, थाली में जो कुछ है वही दिया है, तेरे बेटे ने मना जो कर दिया था।''

''क्या तीन कटोरियाँ थीं और दो चम्मच थे?''

''नहीं तो, चम्मच भी तीन थे।''

''चम्मच तो यहाँ सिर्फ दो रखे हैं।''

''नहीं-नहीं, ध्यान से देखो, जरूर तीन होंगे। मंगलसेन से पूछो, वही थाल उठाकर लाया था।''

''मंगलसेनजी, तीसरा चम्मच कहाँ है?''

इस प्रकार कथोपकथन और संवाद की दृष्टि से यह कहानी अत्यन्त सफल कहानी है।

(4) भाषा-शैली—भाषा-शैली किसी कहानी का प्राणतत्त्व होता है। कहानीकार भीष्म साहनी ने 'खून का रिश्ता' कहानी को सरल एवं बोधगम्य भाषा के द्वारा प्रभावशाली बनाया है। भाषा में चित्रात्मकता एवं प्रवाहमयता के साथ-साथ अर्थ की उपयुक्तता का पूर्ण ध्यान रखा गया है। स्वाभाविक भाषा विषय के अनुरूप संवेदनशील भी है। सूक्ष्म मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने के लिए भाषा की सांकेतिकता से उसकी व्यंजना-शक्ति बढ़ाई गई है। क्रियाओं के वेग और अन्तर्द्वन्द्व के विचार से किया गया शब्द-चयन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है—

वीरजी का चेहरा क्रोध और लज्जा से तमतमा उठा। मनोरमा को डर लगा कि बात और बिगड़ेगी, वीरजी कहीं बाबूजी से न उलझ बैठे। माँजी को भी बुरा लगा। धीमे से कहने लगी, ''देखो जी, नौकरों के सामने मंगलसेन की इज्जत-आबरू का कुछ तो ख्याल रखा करो। आखिर तो खून का रिश्ता है। कुछ तो मुँह-मलाहिजा रखना चाहिए। दिन-भर आपका काम करता है।''

''मैंने उसे क्या कहा है,'' बाबूजी ने हैरान होकर पूछा।

''यों रूखाई के साथ नहीं बोलते। वह क्या सोचता होगा? इस तरह बेआबरूई किसी की नहीं करनी चाहिए।''

अंग्रेजी और उर्दू शब्दों के प्रयोग से भाषा को चुलबुली बनाया गया है। लर्जिस, तकरार, सलामत, उसूल, वख्त, मजाक, हैसियत, आबरू, ख्याल तथा नाज आदि उर्दू शब्दों और इंस्पेक्टर, सूटकेस जैसे अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग स्वाभाविक रूप में हुआ है। भाषा को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए कहानीकार ने यत्र-तत्र खून खौलना, दाँत तले ओंठ दबाना, दुम हिलाना, थू-थू करना, पीठ पर चाबुक पड़ना आदि मुहावरों का प्रयोग करके अपनी भावाभिव्यक्ति को भी सफल बनाया है।

शैली कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्त्व होता है, जिसके द्वारा लेखक कहानी में प्राण-प्रतिष्ठा करता है। कहानी की सभी शैलियों का शब्द-चयन मुग्धकारी है। इस कहानी में बाबूजी की शैली अधिकांश स्थानों पर ओज गुण से युक्त है। सन्तू (नौकर) की शैली मंगलसेन के प्रति व्यंग्यप्रधान है।

(5) देश-काल और वातावरण—वातावरण को कहानी का शरीर कहा जाता है। भीष्म साहनी ने घटना और उससे सम्बन्धित परिस्थितियों का चित्रण सजीव रूप में किया है। कहानी में सभी परिस्थितियों की योजना साभिप्राय और क्रमानुगत है। कहानी में देश-काल और परिस्थितियों (वातावरण) का आँचलिक और स्थानीय रंग उपस्थित है। कहानी का प्रारम्भिक दृश्य मंगलसेन के दिवास्वप्न से सम्बन्धित है; यथा—वह (मंगलसेन) अपने भतीजे वीरजी की सगाई पर सम्भावित सम्मान का स्वप्न देखता है। उसने देखा कि वह समधियों के घर पर बैठा है और वीरजी की सगाई हो रही है। उसकी पगड़ी पर केसर के छींटे हैं और हाथ में दूध का गिलास, जिसे वह घूँट-घूँट करके पी रहा है। ....ले आओ, आधा गिलास। कहानी के इतिवृत्त को विभिन्न परिच्छेदों एवं परिस्थितियों में विभक्त किया गया है। करुणा, आश्चर्य, प्रेम, वात्सल्य आदि की सरसता वातावरण के प्रभाव से सजीव हो उठी है। समाज में दरकते सम्बन्धों का चित्रण समाज के वर्तमान वातावरण के यथार्थ चित्रण द्वारा किया गया है। माता-पिता की सोच पर प्रश्न-चिह्न लगाते पुत्र का यह साकार-चित्र देखिए—

कोने में बैठे सन्तू ने भी हैरान होकर सिर उठाया। माँ झट से बोली, ''हाय-हाय बेटा, शुभ-शुभ बोलो! अपने रईस भाइयों को छोड़कर इस मरदूद को साथ ले जायें? सारा शहर थू-थू करेगा।''

''माँजी, अभी तो आप कह रही थीं, खून का रिश्ता है। किधर गया खून का रिश्ता? चाचाजी गरीब हैं इसीलिए?'' इस प्रकार देश-काल और वातावरण की दृष्टि से यह अत्यन्त सफल कहानी है।

(6) उद्देश्य—प्रत्येक कहानी के मूल में एक केन्द्रीय भाव समाहित होता है, जो कहानी को मौलिक आधार प्रदान करता है। इसी को उद्देश्य की संज्ञा दी जाती है। साहनी ने 'खून का रिश्ता' कहानी के माध्यम से दहेज (सामाजिक कोढ़ का)-उन्मूलन करने का डिण्डिमघोष किया है। कहानी के शीर्षक की महत्ता के आधार पर सामाजिकता, मानवता तथा भाईचारे की भावना को सुदृढ़ बनाना ही कहानी का परमलक्ष्य है। अर्थात् व्यक्ति की वैचारिकता में उदारता, ममत्व, सहृदयता और समता-भाव संचारित करना कहानी का मूल उद्देश्य है। इस कहानी में प्रमुख नारी पात्र वीरजी की माँ ने उसकी खुशी के सम्मुख समस्त आदर्शों तथा प्रलोभन का परित्याग किया है। मात्र खून के रिश्ते की बहुमूल्य कीमत के लिए कहानी का यह परित्यागपूर्ण समापन सभी को चकित कर देनेवाला है।

अथवा

'बहादुर' कहानी की तात्त्विक समीक्षा

कहानी के तत्त्वों के आधार पर प्रस्तुत कहानी की तात्त्विक समीक्षा इस प्रकार की जा सकती है—

(1) कथानक—इस कहानी की कथावस्तु में मध्यमवर्गीय परिवार की साधारण-सी लगनेवाली बातों के माध्यम से मानवीय करुणा को प्रदर्शित किया गया है। इसका कथानक सामान्य जीवन की घटनाओं और स्थितियों के साथ आगे बढ़ता है। यह एक यथार्थवादी कहानी है। इसके पात्र इसी समाज में रहनेवाले प्राणी हैं। प्रारम्भ से अन्त तक यह कहानी बहादुर के चरित्र को ही प्रकाशित करती है। स्वाभाविकता, सहजता, रोचकता, संक्षिप्तता और सुगठितता कथानक की अन्य विशेषताएँ हैं।

बहादुर एक बेसहारा पहाड़ी लड़का है। उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है। माँ द्वारा की जानेवाली मारपीट से तंग आकर वह घर से भागकर एक मध्यम आयवाले परिवार में नौकरी करने लगा है। वह हँसमुख, ईमानदार, परिश्रमी और सहनशील स्वभाव का नेपाली बालक है। निर्मला, जो गृहस्वामिनी है, बहादुर की सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखती है। निर्मला का बड़ा लड़का किशोर तो बहादुर पर पूरी तरह से आश्रित है। धीरे-धीरे किशोर का व्यवहार बहादुर के प्रति बदल जाता है और वह जरा-जरा-सी बात पर बहादुर को गालियाँ देता और पीटता है। कुछ दिनों बाद निर्मला का व्यवहार भी बहादुर के प्रति बदल जाता है। एक दिन किशोर ने बहादुर के बाप को गाली दी तो बहादुर ने उसका काम करने से इनकार कर दिया। रात को वह भूखा ही सो गया। एक दिन निर्मला के घर कुछ रिश्तेदार आए। उन्होंने बहादुर पर ग्यारह रुपये की चोरी का आरोप लगाया। इसी बात पर निर्मला के पति ने उसकी पिटाई कर दी। इस घटना के बाद घर के सभी सदस्य उसके साथ बुरा व्यवहार करने लगे। एक दिन बहादुर अपना सारा सामान छोड़कर चुपचाप घर से चला गया। उसके जाने के बाद घरवालों को उसकी कमी महसूस हुई। सब लोग पश्चात्ताप करने लगे और अनेक प्रकार से उसके कार्य की सराहना करने लगे।

©CHITRA PRAKASHAN

सबको विश्वास हो गया कि रिश्तेदारों के ग्यारह रुपये उसने नहीं चुराए थे। इस प्रकार एक अल्पवयस्क नौकर के मनोविज्ञान को प्रकट करनेवाली यह कहानी अपने अन्तर में मार्मिकता को छिपाए हुए है।

शीर्षक—इस कहानी का सम्पूर्ण कथानक दिलबहादुर को केन्द्रित करके रचा गया है, इसीलिए इसका 'बहादुर' शीर्षक कहानी के लिए सर्वथा उपयुक्त है।

(2) पात्र और चरित्र-चित्रण—इस कहानी में कई पात्र हैं, लेकिन इसके प्रमुख पात्र दिलबहादुर पर ही इस कहानी का कथानक टिका हुआ है। **बहादुर** इस कहानी का नायक है। वह परिश्रमी, हँसमुख तथा व्यवहारकुशल नौकर है। अल्प समय में ही वह घर के सभी सदस्यों पर जादू का-सा प्रभाव डाल देता है। अपने मृदु व्यवहार से वह पराए व्यक्ति को भी अपना बना लेता है। वह स्वाभिमानी, सहनशील और ईमानदार बालक है। पर्वतीय क्षेत्र का मूल निवासी होने के कारण उसमें कष्ट सहन करने की भावना विद्यमान है, लेकिन वह आवश्यकता से अधिक तिरस्कार और अत्याचार सहन नहीं कर पाता और अन्ततः दुःखी होकर घर से चला जाता है। उसके स्वभाव में ऐसी सरसता, भोलापन, करुणा और वेदना है, जिसके कारण उसे भुला पाना कठिन है।

निर्मला मध्यमवर्गीय परिवार की स्त्री है। वह नौकर रखकर केवल आराम ही नहीं चाहती, अपितु वह अपनी मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए भी नौकर रखती है। वह पड़ोसियों को अपनी शान-शौकत से प्रभावित करना चाहती है। वह विरोध और अवज्ञा सहन नहीं करती। प्रारम्भ में तो वह बहादुर को बहुत प्यार करती है, लेकिन बाद में उसका व्यवहार बदल जाता है। बहादुर के चले जाने के बाद वह पश्चात्ताप भी करती है। इस प्रकार वह आधुनिक समाज में जीनेवाली मध्यमवर्गीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती है।

निर्मला का पति भी दिखावे और प्रदर्शन को ही अपने जीवन का वास्तविक आधार मानता है। इसी कारण अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर भी वह अपने भाइयों और रिश्तेदारों की नकल करते हुए अपने यहाँ नौकर रख लेता है। उसमें ईर्ष्या की भावना भी दृष्टिगोचर होती है; क्योंकि जब वह अपनी भाभियों को आराम से चारपाइयाँ तोड़ते देखता है तो उसे ईर्ष्या होती है। उसे अपनी पत्नी से पूरी सहानुभूति है। यद्यपि वह संयत स्वभाव का व्यक्ति है, किन्तु घर की विषम परिस्थितियों में उलझकर अपना संयम त्याग देता है और नौकर की पिटाई कर देता है।

किशोर एक बिगड़ा हुआ नवयुवक है। वह नौकर को हीन दृष्टि से देखता है और बात-बात पर उसे गाली देता है। नौकर को पीटना वह अपना अधिकार समझता है। वह पूरी तरह आलसी बन चुका है। रात में सोते समय वह बहादुर से अपने शरीर की मालिश कराता है और अपनी इच्छाओं की पूर्ति न होने पर अपना क्रोध प्रकट करने लगता है।

इस प्रकार इस कहानी के सभी पात्रों का चारित्रिक विकास अत्यन्त सहज और स्वाभाविक रूप में हुआ है। पात्रों के चरित्र-चित्रण के माध्यम से कहानीकार ने एक मध्यमवर्गीय परिवार की मानसिक स्थिति को सहज रूप में व्यक्त किया है। बहादुर के चरित्र के माध्यम से कहानीकार ने कहानी को चरमबिन्दु तक पहुँचाया है। बहादुर और निर्मला का चरित्र कहानीकार ने बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

(3) कथोपकथन या संवाद—इस कहानी के संवाद अत्यन्त सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित, स्वाभाविक, सजीव, स्पष्ट, रोचक, सार्थक और गतिशील हैं। वे पात्रों के अनुकूल और सटीक हैं। संवादों के द्वारा कथानक का विकास हुआ है और उनके द्वारा ही पात्रों के चरित्र भी विकसित हुए हैं। संक्षिप्त और स्वाभाविक कथोपकथन पर आधारित एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है—

—बहादुर!—मैंने कड़े स्वर में कहा।
—जी, बाबूजी।
—इधर आओ।
वह आकर खड़ा हो गया।
—तुमने यहाँ से रुपये उठाए थे?
—जी नहीं, बाबूजी! उसने निर्भय उत्तर दिया।
—ठीक बताओ—मैं बुरा नहीं मानूँगा।
—नहीं बाबूजी! मैं लेता, तो बता देता।

(4) भाषा-शैली—प्रस्तुत कहानी में सरल, स्वाभाविक और सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। कहानीकार ने चित्रात्मक एवं प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग किया है। भाषा कथा के अनुरूप है। कहानी की भाषा बोलचाल की व्यावहारिक भाषा है, जिसमें अन्य भाषाओं के शब्द भी लिए गए हैं। शरारत, ओहदा, किस्सा, तकलीफ, महसूस, फरमाइश, तमीज, आईना, इज्जत आदि शब्द उर्दू से लिए गए हैं। सिनेमा, नेकर, पुलिस, रिपोर्ट, बस आदि अंग्रेजी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग भी हुआ है; जैसे—माथा ठनकना, हुलिया टाइट होना, बातों की जलेबी छानना, मन हटाना, नौ दो ग्यारह होना, पंच बराबर होना, पेट में दाढ़ी होना, सीधे मुँह बात न करना आदि। इसके अतिरिक्त काव्यात्मक, वर्णनात्मक और आलंकारिक शैली को अपनाकर कहानीकार ने स्वाभाविक चित्रण किया है। कहानी में आत्मपरक शैली का विशेष प्रयोग हुआ है।

(5) देश-काल और वातावरण—कहानी में देश-काल और वातावरण का ध्यान भी रखा गया है। कथानक के अनुरूप निम्न और मध्यमवर्गीय परिवार के स्वाभाविक और सजीव वातावरण का चित्रण किया गया है। बहादुर निम्नवर्गीय परिवार का सदस्य है और निर्मला का परिवार मध्यमवर्गीय स्थिति का है। वह आर्थिक दृष्टि से अधिक सम्पन्न नहीं है, लेकिन झूठे दिखावे और शान-शौकत के लिए नौकर की आवश्यकता को बनाए हुए है। नौकर रखने का प्रदर्शन, नौकर के प्रति दिखावे का व्यवहार, नौकर पर रोब डालना, नौकर से जी-तोड़ काम लेना, उसको बात-बात पर पीटना और गाली देना आदि घटनाओं ने पारिवारिक वातावरण को सजीव और मार्मिक बना दिया है। कहानीकार ने समाज में व्याप्त आडम्बर, प्रदर्शन, ईर्ष्या और स्वार्थपरता की भावनाओं और इनसे उत्पन्न स्थितियों का सहज चित्रण किया है।

मध्यमवर्गीय परिवार का रूप तो वातावरण की पृष्ठभूमि से ही उभरा है। निर्मला का पड़ोसियों को सुनाकर दिलबहादुर के प्रति स्नेह प्रदर्शन करना, अपना बड़प्पन दिखाना, नौकर पर रोब दिखाना आदि की पुष्टि वातावरण के चित्रण द्वारा ही सम्भव हुई है।

(6) उद्देश्य—यह कहानी निम्न एवं मध्यमवर्गीय समाज के मनोविज्ञान का वास्तविक चित्र प्रदर्शित करती है। आधुनिक समाज झूठे-प्रदर्शन और शान-शौकत में विश्वास करता है। वह बनावटी जिन्दगी जीना पसन्द करता है। कहानीकार ने निम्न वर्ग के प्रति सहानुभूति रखते हुए मध्यम वर्ग के लोगों की स्थिति की वास्तविकता को समझा है। उसने वर्ग-भेद मिटाने को प्रोत्साहन दिया है। कहानीकार का सन्देश है कि मानवीय सहानुभूति के आधार पर ही वर्ग-भेद की खाई को पाटा जा सकता है।

7. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्ड के प्रश्न का उत्तर दीजिए— **5**

(i) 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की प्रमुख घटना का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : **'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की प्रमुख घटना**

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य में माता कुन्ती की कर्ण से विनती का महत्त्वपूर्ण स्थान है; क्योंकि इसमें माता कुन्ती और पुत्र कर्ण के अन्तर्द्वन्द्व और वात्सल्य प्रेम को बड़े मार्मिक ढंग से दर्शाया गया है। इसमें कुन्ती कर्ण के पास आकर उसके प्रति अपना ममत्व एवं पुत्र-वात्सल्य प्रकट करती है, परन्तु कर्ण अटल रहता है और किसी भी मूल्य पर दुर्योधन का साथ छोड़ने को तैयार नहीं होता।

फिर भी कुन्ती निराश नहीं हुई। उसने कर्ण की दानवीरता की प्रशंसा की और उसे अपने अंक में लेना चाहा। कर्ण माँ का प्यार पाकर पुलकित हो उठा, परन्तु साथ ही सचेत भी। वह पाण्डवों के पक्ष को ग्रहण करने को तैयार नहीं हुआ, किन्तु उसने अर्जुन को छोड़कर अन्य किसी पाण्डव को न मारने का वचन कुन्ती को दे दिया। कर्ण ने कहा कि तुम प्रत्येक दशा में पाँच पुत्रों की माता बनी रहोगी। कुन्ती निराश हो गई। कर्ण ने युद्ध समाप्त

© CHITRA PRAKASHAN

होने पर कुन्ती की सेवा करने की बात कही। अन्त में कुन्ती निराश होकर लौट गई।

अथवा

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के नायक कर्ण का चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) सामाजिक विडम्बना का शिकार—कर्ण यद्यपि क्षत्रिय कुल से सम्बन्धित है, तथापि उसका पालन-पोषण सूत-परिवार में होने के कारण वह सामाजिक दृष्टि से हीन माना जाता है और उसे कदम-कदम पर अपमानित होना पड़ता है। अर्जुन को रंगशाला में द्वन्द्व-युद्ध के लिए ललकारनेवाले कर्ण को कृपाचार्य की कूटनीतियों का शिकार होना पड़ता है और द्रौपदी-स्वयंवर में भी उसे अपमान का घूँट पीना पड़ता है।

(2) सच्चा मित्र—कर्ण दुर्योधन का सच्चा मित्र है। वह दुर्योधन के प्रति पूर्णत: कृतज्ञ है। वह श्रीकृष्ण और कुन्ती के प्रलोभनों में नहीं आता। वह स्पष्ट कह देता है कि मैं दुर्योधन को किसी भी दशा में नहीं छोड़ सकता। वह तो दुर्योधन पर सबकुछ न्योछावर करने को तत्पर रहता है—

मित्रता बड़ा अनमोल रतन,
कब इसे तोल सकता है धन?
धरती की तो क्या है बिसात?
आ जाय अगर बैकुण्ठ हाथ,
उसको भी न्योछावर कर दूँ,
कुरुपति के चरणों पर धर दूँ।

(3) साहसी और वीर धनुर्धर—कर्ण साहसी, वीर और पराक्रमी धनुर्धर है। वह सामाजिक प्रताड़नाओं एवं बहिष्कारों को सहकर भी न तो किसी के आगे झुका है, न उसने हार मानी है। वह पूर्ण शक्ति से अपना युद्ध-कौशल दिखाता है। उसे अपने भुजबल में पूर्ण विश्वास है; यथा—

"पूछो मेरी जाति, शक्ति हो तो, मेरे भुजबल से।"

(4) महादानी एवं धर्मनिष्ठ—कर्ण किसी भी याचक को अपने यहाँ से खाली हाथ नहीं लौटने देता है। यहाँ तक कि ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र को वह अपने कवच-कुण्डल भी दे देता है। ये उसकी धर्मनिष्ठता, दानप्रियता एवं दृढ़ता के प्रतीक हैं। उसके विषय में प्रसिद्ध था—

रवि पूजन के समय सामने जो याचक आता था,
मुँहमाँगा वह दान कर्ण से अनायास पाता था।

(5) जाति-प्रथा के विरुद्ध विद्रोह—कर्ण जाति-प्रथा और वर्णाश्रम-व्यवस्था से बहुत ही क्षुब्ध था; क्योंकि इन्हीं के आधार पर उसे पग-पग पर प्रताड़ित किया गया था। वह मानता है—

ऊपर सिर पर कनक छत्र, भीतर काले के काले,
शरमाते हैं नहीं जगत में जाति पूछने वाले।

(6) जन्मदात्री माँ के प्रति क्षुब्ध और मानसिक अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त—जन्म देकर ईश्वर की कृपा और समाज की उपेक्षा पर जीने के लिए छोड़ देनेवाली माँ के प्रति उसके मन में वितृष्णा है; क्योंकि कर्ण को समाज में पग-पग पर अपमानित होना पड़ता है और यही उसके मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का कारण भी है। उसका क्षोभ और मानसिक अन्तर्द्वन्द्व निम्नलिखित पंक्तियों से स्पष्ट झलकता है—

जो जनकर पत्थर हुई जाति के भय से,
सम्बन्ध तोड़ भागी दुधमुँहे तनय से।
मर गई नहीं वह स्वयं मार सुत को ही,
जीना चाहा बन कठिन क्रूर निर्मोही।
क्या कहूँ देवि! मैं तो ठहरा अनचाहा,
पर, तुमने माँ का खूब चरित्र निबाहा।

(7) अडिग निष्ठा/सच्चा गुरुभक्त—कर्ण अपने गुरु परशुराम की निन्दा को नहीं सुन सकता। गुरु के शाप को भी वह बड़ी श्रद्धा से स्वीकार करता है—

"छूकर उनका चरण कर्ण ने अर्घ्य अश्रु का दान किया।"

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कर्ण का चरित्र दिव्य एवं उच्च संस्कारों से युक्त है, जो मानवता का पोषक है। संघर्षों के मध्य वह मित्रता की आन को निभाता है। वास्तव में उसके चरित्र में सच्ची मैत्री की अडिग निष्ठा विद्यमान है।

(ii) 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के आधार पर प्रमुख पात्र का चरित्रांकन कीजिए।

उत्तर :

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र महात्मा गांधी का चरित्र-चित्रण

(1) सत्य-अहिंसा के पुजारी—महात्मा गांधी ने संसार के सम्मुख सत्य और अहिंसा का अभिनव प्रयोग किया। उनका दृढ़-विश्वास था कि बिना रक्तपात के भी स्वतन्त्रता देवी का स्वागत किया जा सकता है। इसके बल पर ही उन्होंने भारत से शक्तिशाली ब्रिटिश सत्ता के पैर उखाड़ दिए। सत्य और अहिंसा का प्रयोग उन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध ही नहीं किया, अपितु इन सिद्धान्तों को अपने व्यक्तिगत जीवन में भी अक्षरश: उतारा।

(2) साहसी एवं दृढ़निश्चयी—महात्मा गांधी अपने निश्चय पर दृढ़ रहनेवाले एवं साहसी व्यक्ति थे। उन्होंने ब्रिटिश शासन के नमक कानून को तोड़ने हेतु अपने अद्‌भुत साहस का प्रदर्शन किया। वे अंग्रेजी सत्ता के क्रूर दमन-चक्र से तनिक भी विचलित नहीं हुए—

वीरोचित वर आवेशों से
सुलग रहा था बापू का मन!

'डाण्डी-यात्रा' के समय उनके दृढ़-निश्चय एवं अपूर्व साहस के दर्शन होते हैं—

प्राण त्याग दूँगा पथ पर ही,
उठा सका मैं यदि न नमक कर।
लौट न आश्रम में जाऊँगा,
जो स्वराज्य ला सका नहीं घर।

(3) महान् जननायक—गांधीजी भारतीय जनता के सच्चे नेता थे। उनका भारतीय जनता के हृदय पर पूर्ण राज्य था। भारत की जनता ने उनके नेतृत्व में ही स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी और अंग्रेजों को यहाँ से भगाकर ही दम लिया—

लोक प्रगति का देवदूत वह,
तीस कोटि का रहा कृतीजन।
विश्व चमत्कृत सोच रहा था,
क्या भारत की सिद्धि साध्य धन?

(4) मानवीय गुणों से युक्त—गांधीजी में दया, करुणा, त्याग, इन्द्रिय-संयम, मानवता के प्रति प्रेम, विश्व-बन्धुत्व एवं वीरता के गुण कूट-कूटकर भरे हुए थे—

लिए अहिंसा युग के तन वह
खड़े सत्य वट नीचे निर्भय
स्फटिक शुभ्र स्वर में पुकारते
चलता धरती पर अरुणोदय।

(5) समदर्शी—गांधीजी की दृष्टि में न कोई छोटा था, न अस्पृश्य और न ही तुच्छ। वे सभी को समान दृष्टि से देखते थे। अस्पृश्यता के निवारण हेतु उन्होंने आन्दोलन भी चलाया—

छुआछूत का भूत भगाने
किया व्रती ने दृढ़ आन्दोलन,
हिले द्विजों के रुद्ध हृदय पट,
खुले मन्दिरों के जड़ प्रांगण।

(6) अहिंसक मानवतावादी—'मुक्तियज्ञ' के गांधी अहिंसक मानवतावादी थे। उनका विश्वास था कि हिंसा से हिंसा और घृणा से घृणा पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती। वे परस्पर प्रेम उत्पन्न कर इस घृणा एवं हिंसा को दूर करना चाहते थे। वे हिंसा का प्रयोग करके स्वतन्त्रता भी नहीं चाहते थे; क्योंकि उन्हें सन्देह था कि ऐसी स्वतन्त्र भूमि मानवता से रहित होगी—

© CHITRA PRAKASHAN

घृणा, घृणा से नहीं मरेगी,
बल प्रयोग पशु साधन निर्दय।
हिंसा पर निर्मित भू-संस्कृति,
मानवीय होगी न, मुझे भय।

महात्मा गांधी महान् राष्ट्रनायक, स्वतन्त्रता के पुजारी, सत्य और अहिंसा की मूर्ति, निर्भीक, साहसी, दृढ़प्रतिज्ञ एवं संयमी व्यक्ति थे। प्रस्तुत खण्डकाव्य के गांधीजी के व्यक्तित्व से सम्बन्धित गुणों की तुलना उनके परम्परागत मान्य स्वरूप से करने पर ज्ञात होता है कि उनमें सभी लोक-कल्याणकारी गुणों का समावेश करते हुए कवि ने उनके चरित्र को एक नया स्वरूप प्रदान किया है, जो अधिक प्रखर एवं प्रकाशवान् है।

अथवा

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : **'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की विशेषताएँ**

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(अ) भावपक्षीय विशेषताएँ

'मुक्तियज्ञ' की भावपक्ष सम्बन्धी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1) व्यक्ति के स्थान पर समष्टि की विचारप्रधानता—'मुक्तियज्ञ' के भावपक्ष में विचारों की प्रधानता है। इसमें राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं गांधीवादी दर्शन के भावों की व्याख्या की गई है। कवि ने गांधी-दर्शन एवं भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के भावों को सरल ढंग से प्रस्तुत करते हुए उसका सम्बन्ध विश्व-मानवतावाद से जोड़ा है—

प्रतिध्वनित होता जगती में
भारत आत्मा का नैतिक पण,
नई चेतना शिखा जगाता
आत्मशक्ति से लोक उन्नयन।

(2) समष्टि-प्रेरणा—'मुक्तियज्ञ' में प्रत्यक्ष रूप से भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास की घटनाओं का वर्णन किया गया है, किन्तु इन घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में कवि ने तत्कालीन राष्ट्रीय नव-जागरण के भाव को स्वर दिया है। कवि गांधीवादी दर्शन को इस युग-चेतना का स्वर मानते हैं और इसका विस्तार राष्ट्रीयता से विश्वबन्धुत्व एवं मानवतावाद तक कर देते हैं। विश्व की मानवता के कल्याण हेतु वे भौतिकतावाद को त्यागकर अध्यात्मपरक चिन्तन को जीवन का अभिन्न अंग बनाने की प्रेरणा देते हैं; जिस कारण खण्डकाव्य में अनेक स्थानों पर भौतिकता और अध्यात्मपरक चिन्तन में संघर्ष होता दिखाई पड़ता है, किन्तु कविवर पन्त ने भारतभूमि से उठी आत्मिक एवं आध्यात्मिक प्रेरणा को स्वर देकर इस खण्डकाव्य में समष्टि-प्रेरणा का भाव भर दिया है।

(3) रस-योजना—रस की दृष्टि से प्रस्तुत खण्डकाव्य वीर रसप्रधान है। इसमें बलिदान की एक साहसपूर्ण कथा है, जिसमें विचारों की गहनता है। इस काव्य में अहिंसात्मक युद्ध के वर्णन में ओज और उत्साह के दर्शन होते हैं, जिसके कारण अनेक स्थलों पर वीर रस का उदय हुआ है—

गूँज रहा रण शंख, गरजती
भेरी, उड़ता सुरधनु केतन।
ऊर्ध्व असंख्य पदों से धरती
चलती, यह मानवता का रण!

प्रस्तुत काव्य में वीर रस के साथ-साथ ब्रिटिश सरकार के दमन-चक्र और बंगाल में पड़े अकाल के चित्रण आदि के मार्मिक-स्थलों पर करुण और शान्त रस की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। करुण रस का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

सदियों के पिचके पेटों ने
किया क्षुधार्त्त करुण वन-रोदन।
था दुकाल निर्मम प्रतीक भर,
कब से भूखे भू के जन-गण!

(ब) कलापक्षीय विशेषताएँ

'मुक्तियज्ञ' में पन्तजी की कलात्मक काव्य-प्रतिभा का उपयोग नहीं के बराबर हुआ है; तथापि इस दृष्टि से भी उनकी कलात्मकता के कई रूपों में दर्शन होते हैं; यथा—

(1) भाषा-शैली—प्रस्तुत खण्डकाव्य की भाषा-शैली प्रौढ़, परिपक्व और व्यंजना-शक्ति से परिपूर्ण है। इस काव्य में गांधी-युग के इतिहास का काव्यात्मक आलेख है। भाषा में अभिव्यक्ति की सरलता, बोधगम्यता और चित्रात्मकता के साथ-साथ सरसता और सुकुमारता के दर्शन भी होते हैं। भाषा कोमलकान्त पदावली तथा शुद्ध तत्सम शब्दों से युक्त खड़ीबोली है। उसमें ओज और प्रसाद गुण की प्रधानता है; यथा—

मनु-कक्ष था प्रज्ञा विस्तृत
हृदयकोष्ठ प्रेमाऽमृत सिंचित।
सिर पर स्वर्णिम सत्य कलश था,
अक्षय आत्मज्योति से दीपित!

'मुक्तियज्ञ' की शैली मूर्त, अभिधात्मक और सरल है। इसमें कवि ने किसी प्रकार की कलात्मकता अथवा काल्पनिकता का चमत्कारपूर्ण समावेश नहीं किया है। कवि की दृष्टि कथ्य के महत्त्व पर अधिक, कथन की शैली पर कम टिकी है। कवि ने शैली को अधिक सँवारने की आवश्यकता नहीं समझी है। यही कारण है कि उन्होंने अलंकार-योजना की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया है। यद्यपि यह कृति स्वतन्त्रता आन्दोलन के वर्णन पर ही आधारित है, तथापि कवि के विचारों की प्रौढ़ता के फलस्वरूप इस खण्डकाव्य में वह सार्वभौम दृष्टि झाँकती मिलती है, जिसका आधार आत्मपरक मानवतावाद है। कवि की यह शैली सशक्त है और इसमें गम्भीर सामाजिक एवं दार्शनिक तत्त्वों की अभिव्यक्ति की पूर्ण क्षमता है।

(2) अलंकार-योजना—'मुक्तियज्ञ' में अलंकारों का प्रयोग रूप-चित्रण के लिए नहीं, वरन् विषय की व्याख्या के लिए किया गया है। 'मुक्तियज्ञ' के रचनाकार को रजत-चाँदनी, स्वर्णिम प्रभात और इन्द्रधनुषी रंगों के लिए अवकाश नहीं था, किन्तु जहाँ भी पन्तजी को अवसर मिला, उन्होंने छायावादी सौन्दर्य-चेतना में गृहीत अलंकरण सामग्री का प्रयोग अवश्य किया है। विषय की व्याख्या के लिए रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा आदि अलंकारों के प्रयोग यथास्थान हुए हैं। रूपक एवं उपमा अलंकार के प्रयोग पर आधारित निम्नलिखित उदाहरण देखिए—

रूपक— **हिंस्रजगत में उगा महत् यह,**
मनुज दया का माखन पर्वत।

उपमा— **जन-मन आवेशों की विद्युत्**
मत्त नाचती हर्ष घोष कर,
नभ झुककर मिलता सागर से
सागर उड़ नभ-उर देता भर!

(3) छन्द-योजना—पन्तजी भावों के अनुसार छन्द-विधान प्रस्तुत करने में दक्ष हैं। 'मुक्तियज्ञ' के छन्द भी भावों तथा विचारों के अनुकूल हैं। सम्पूर्ण काव्य की रचना 16 मात्राओं के छन्द में की गई है तथा खण्डकाव्य के अन्त में छन्द-परिवर्तित हुआ है, जो रचना की समाप्ति का सूचक भी है और भावी मंगल-कामना का द्योतक भी।

आदर्शपूर्ण उद्देश्य हेतु रचित यह रचना रस एवं छन्द-विधान की दृष्टि से भी खण्डकाव्य के लिए अपेक्षित विशेषताओं से विभूषित है; क्योंकि इसमें एक ही छन्द का प्रयोग किया गया है और एक ही रस 'वीर रस' प्रयुक्त हुआ है। इस दृष्टिकोण से **'मुक्तियज्ञ'** एक सफल खण्डकाव्य ही नहीं, बल्कि आकार की लघुता के बावजूद इसकी आत्मा में एक महाकाव्य जैसी गरिमा है।

(iii) 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर प्रमुख पात्र का चरित्रांकन कीजिए।

उत्तर : **'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र द्रौपदी का चरित्र-चित्रण**

प्रस्तुत खण्डकाव्य के आधार पर द्रौपदी की चरित्रगत विशेषताएँ अग्र प्रकार हैं—

© CHITRA PRAKASHAN

(1) स्वाभिमानिनी—द्रौपदी एक वीरांगना है; अत: उसमें स्वाभिमान की उदात्त भावना का होना स्वाभाविक है। उसे अपमान सह्य नहीं है। वह नारी के स्वाभिमान को ठेस पहुँचानेवाली किसी भी बात को मानने के लिए तैयार नहीं है। अपने स्वाभिमान के कारण ही अपनी रक्षा के लिए वह स्वयं को समर्थ मानती है। वह दु:शासन को ललकारती हुई कहती है—

मौन हो जा, मैं सह सकती न
कभी भी नारी का अपमान।

(2) सत्यनिष्ठ एवं न्यायप्रिय—द्रौपदी सत्य और न्याय के प्रति पूर्णत: निष्ठावान् है। वह अपने प्राण देकर भी न्याय और सत्य का पालन करने की पक्षधर है। जब दु:शासन पाशविक बल का प्रदर्शन कर द्रौपदी के सत्य एवं शील का हरण करना चाहता है तो वह दु:शासन को ललकारती हुई कहती है—

न्याय में रहा मुझे विश्वास,
सत्य में शक्ति अनन्त महान।
मानती आई हूँ मैं सतत,
''सत्य ही है ईश्वर, भगवान्।।''

(3) वाक्पटु—द्रौपदी के कथन उसकी वाक्पटु एवं योग्यता के परिचायक हैं। चीर-हरण के समय कौरवों की सभा में वह अकाट्य तर्क प्रस्तुत करके सभी सभासदों को निरुत्तर कर देती है। वह दु:शासन से न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म आदि पर विवाद करती है। उसके वाक्चातुर्य का एक उदाहरण देखिए—

पूछती हूँ मैं केवल एक प्रश्न, उसका उत्तर मिल जाय।
करूँगी फिर जो हो आदेश, बड़ों का वचन मानकर न्याय।।
प्रथम महाराज युधिष्ठिर मुझे, या कि थे गए स्वयं को हार।
स्वयं को यदि, तो उनको मुझे, हारने का था क्या अधिकार?

(4) नारी-जाति का आदर्श—द्रौपदी सम्पूर्ण नारी-जाति के लिए एक आदर्श है। दु:शासन नारी को केवल वासना एवं भोग की वस्तु कहता है तो वह बताती है कि नारी वह शक्ति है, जो विशाल चट्टान को भी हिला देती है। यद्यपि वह कली के समान कोमल है, परन्तु पापियों के संहार के लिए वह भैरवी भी बन सकती है। वह नारी-जाति के लिए गौरव की घोषणा करती है—

पुरुष के पौरुष से ही सिर्फ,
बनेगी धरा नहीं यह स्वर्ग।
चाहिए नारी का नारीत्व,
तभी होगा यह पूरा सर्ग।।

(5) निर्भीक एवं साहसी—द्रौपदी के बाल खींचकर दु:शासन उसे भरी सभा में ले आता है और उसे अपमानित करना चाहता है, परन्तु द्रौपदी बड़े साहस एवं निर्भीकता के साथ दु:शासन को निर्लज्ज और पापी कहकर पुकारती है—

अरे ओ ! दु:शासन निर्लज्ज !
देख तू नारी का भी क्रोध।
किसे कहते उसका अपमान
कराऊँगी मैं इसका बोध।।

(6) सती-साध्वी धर्मनिष्ठ नारी—कवि ने द्रौपदी के चरित्र को एक भारतीय सती-साध्वी नारी के आदर्श चरित्र के रूप में चित्रित किया है, जो भारत-माता का प्रतीक है। कवि ने द्रौपदी के चरित्र के माध्यम से सत्य, न्याय, धर्म, विवेक, समता और समष्टि आदि मानवीय आदर्शों को भली प्रकार उजागर किया है। द्रौपदी के रूप में भारत-माता की प्रतिमा साकार हो उठी है। द्रौपदी के गुण, शील एवं धर्मनिष्ठा की प्रशंसा स्वयं धृतराष्ट्र को भी करनी पड़ती है—

द्रौपदी धर्मनिष्ठ है, सती-
साध्वी, सत्य-न्याय साकार।
इसी से आज सभी से प्राप्त
उसे बल, सहानुभूति अपार।।

सार रूप में कहा जा सकता है कि द्रौपदी पाण्डव-कुलवधू, वीरांगना, स्वाभिमानी, आत्मगौरव-सम्पन्न, सत्य और न्याय की पक्षधर, सती-साध्वी, नारीत्व के स्वाभिमान से मण्डित एवं नारी-जाति का आदर्श है।

अथवा

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की किसी घटना का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : **'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की प्रमुख घटना**

प्रस्तुत खण्डकाव्य 'महाभारत' के द्रौपदी-चीर-हरण की अत्यन्त संक्षिप्त; किन्तु मार्मिक घटना पर आधारित है। इस घटना ने अनेक कवियों के मानस को छुआ है और अनेक काव्यों को जन्म दिया है। उन रचनाओं की अपेक्षा इस रचना की कथावस्तु की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसे कवि ने संवाद-शैली में गूँथकर अनुपम नाटकीय और चित्रोपम सौन्दर्य प्रदान किया है। इस कारण इसमें एकांकी नाटक की श्रव्य और दृश्य दोनों विशेषताएँ आ गई हैं। इस खण्डकाव्य में कवि ने द्रौपदी के चीर-हरण की पौराणिक घटना के लघु आधार पर ऐसी विशद वस्तु-योजना की है, जिसकी सीमा में महाभारत युग के साथ वर्तमान युग भी बोल उठा है। दुर्योधन पाण्डवों को द्यूतक्रीडा के लिए आमन्त्रित करता है और क्रीडा आरम्भ होने पर छल-प्रपंच से उनका सबकुछ छीन लेता है। युधिष्ठिर द्यूत में स्वयं को भी हार जाते हैं। अन्त में वह द्रौपदी को दाँव पर लगाते हैं और हार जाते हैं।

(iv) 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की विशेषताओं को लिखिए।

उत्तर : **'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की विशेषताएँ**

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की भाव एवं कलापक्ष सम्बन्धी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(अ) भावपक्षीय विशेषताएँ

(1) वर्णनात्मकता में भावात्मकता—खण्डकाव्य के शिल्प के अनुसार 'आलोक-वृत्त' की कथा वर्णनात्मक है। वर्णनात्मक स्थलों को कवि ने भावात्मक स्वरूप देने का पूरा-पूरा प्रयास किया है। मार्मिक स्थलों के चयन में कवि की प्रतिभा एवं सहृदयता भी पूरी तरह परिलक्षित होती है।

(2) आदर्श भावों की अभिव्यंजना—सम्पूर्ण खण्डकाव्य में राष्ट्रभक्ति, सत्य, अहिंसा, मानवीय भावनाओं, त्याग आदि का भाव मुखरित होता है। महात्मा गांधी के व्यक्तित्व में इन्हीं आदर्श गुणों का आलोक प्रकाशित होता है।

(3) रस-योजना—खण्डकाव्य में किसी विशेष रस का परिपाक हो, यह आवश्यक नहीं है। उसमें किसी उदात्त भाव को चरम सौन्दर्य पर दिखाया जा सकता है। 'आलोक-वृत्त' में वीर, शान्त और करुण आदि रसों की मार्मिक अभिव्यंजना हुई है।

(ब) कलापक्षीय विशेषताएँ

(1) भाषा-शैली (2015)—'आलोक-वृत्त' की भाषा अत्यन्त ललित और चित्ताकर्षक है। भाषा विचारों और भावों को मन तक पहुँचाने में पूरी तरह समर्थ है। ओज गुण का निर्वाह आद्योपान्त किया गया है, परन्तु जिन प्रसंगों में माधुर्य की अपेक्षा है; वहाँ भाषा अत्यन्त मधुर रूप ग्रहण कर लेती है। प्रसाद गुण तो इसकी प्रत्येक पंक्ति में देखा जा सकता है। माधुर्य का एक उदाहरण प्रस्तुत है—

प्रिय की अनुगामिनी, कामिनी, पावन शोभा वाली।
नई कोंपलों से मण्डित जैसे रसाल की डाली।।

'आलोक-वृत्त' की शैली प्रमुख रूप से वर्णनात्मक है। यत्र-तत्र संवादात्मकता भी दृष्टिगत होती है। कथावस्तु के विस्तृत स्वरूप को देखते हुए कवि ने इस शैली को अपनाया है, किन्तु इस वर्णनात्मक शैली में भावात्मकता को स्थान देकर उन्होंने भावों को कुशल अभिव्यक्ति दी है।

(2) अलंकार-योजना—'आलोक-वृत्त' में अलंकारों का प्रयोग अत्यन्त संयमित रूप में हुआ है। कहीं पर भी वे सप्रयास लाए हुए प्रतीत नहीं होते। अलंकारों ने कहीं पर भी भाव और भाषा को बोझिल नहीं किया है। एक उदाहरण देखिए—

© CHITRA PRAKASHAN

घोर निराशा में आशा की वीर टेरते तान चले,
तम-तमाल पर तरुण तरणि का जैसे किरण-कृपान चले।

(3) छन्द-योजना—'आलोक-वृत्त' में छन्दों की विविधता है। 16 मात्राओं के छोटे छन्द से लेकर 32 मात्राओं के लम्बे छन्दों का प्रयोग इसमें सफलतापूर्वक किया गया है। प्रथम सर्ग में मुक्त छन्द का प्रयोग हुआ है। सर्गों के मध्य में गीत-योजना भी की गई है, जिससे राष्ट्रीय भावनाओं की वृद्धि में सहयोग मिला है।

इस प्रकार यह द्रष्टव्य है कि 'आलोक-वृत्त' में गांधीजी जैसे महान् लोकनायक के गुणों को आधार बनाकर काव्य-रचना की गई है। कथा की पृष्ठभूमि विस्तृत है, किन्तु कवि ने गांधीजी की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करने हेतु आवश्यक प्रसंगों का चयन कर उसे इस प्रकार संगठित एवं विकसित किया है कि वह खण्डकाव्य के उपयुक्त बन गई है। गौण पात्रों का चित्रण नायक के चरित्र की विशेषताओं को प्रकाशित करने हेतु किया गया है। आदर्शपूर्ण भावनाओं की स्थापना हेतु रचित इस काव्य-ग्रन्थ में यद्यपि रसों एवं छन्दों की विविधता है; तथापि इससे खण्डकाव्य के उद्देश्य एवं उसके विधा सम्बन्धी तत्त्वों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता; अत: इस काव्यग्रन्थ को एक सफल खण्डकाव्य कहना उपयुक्त होगा।

अथवा

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र महात्मा गांधी का चरित्र-चित्रण

गांधीजी के लोकनायक चरित्र की विशेषताओं को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—

(1) देशप्रेमी—गांधीजी अपने देश (मातृभूमि) से इतना प्रेम करते थे कि उन्होंने अपना तन-मन-धन अर्थात् सर्वस्व देशोद्धार के लिए अर्पित कर दिया।

(2) सत्य और अहिंसा के उपासक—गांधीजी ने अपने जीवन में सत्य और अहिंसा को सर्वोपरि महत्त्व दिया। वे अहिंसा को महान् शक्तिशाली अस्त्र मानते रहे। अहिंसा व्रत का पूर्ण पालन कोई विरला व्यक्ति ही कर सकता है। उन्होंने अपने जीवन में हिंसा न करने का दृढ़-निश्चय किया—

मुँह से उफ तक किए बिना,
अधिकारों के हित अड़ना है।
नहीं आदमी से, उसकी
दुर्बलताओं से लड़ना है।

(3) पुरुषार्थ एवं ईश्वर के प्रति आस्थावान्—गांधीजी पुरुषार्थ को भाग्य से ऊपर मानते थे। उन्होंने अपने पुरुषार्थ के बल पर ही ब्रिटिश राज्य की नींव हिला दी। वे ईश्वर के प्रति सदा आस्थावान् बने रहे। उन्होंने जो कुछ भी किया, ईश्वर को साक्षी मानकर ही किया। उनकी दृष्टि में साधन पवित्र होने चाहिए, परिणाम ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। उन्होंने कहा—

क्या होगा परिणाम सोच लूँ,
पर क्यों सोचूँ, वह तो।
मेरा क्षेत्र नहीं, स्त्रष्टा का,
जो प्रभु करे वही हो।।

(4) सदाचरण एवं मानवीय मूल्यों के प्रति निष्ठावान्—गांधीजी ने अपने जीवन में मानवीय मूल्यों एवं सदाचरण को सदैव बनाए रखा। उनके हृदय में मानवमात्र के प्रति ही नहीं, प्राणिमात्र के प्रति भी समभाव था। उनके अनुसार जाति, धर्म, वर्ण एवं रूप आदि के आधार पर भेदभाव करना अनुचित है। वे पाप से घृणा करने की बात कहते थे, पापी से नहीं।

(5) जनतन्त्र में आस्था—गांधीजी मानव-मानव में समता का भाव आवश्यक ही नहीं, वरन् अनिवार्य भी मानते थे। उनके अनुसार लोकतन्त्र (जनतन्त्र) ही मानव-भावना का सच्चा प्रतीक है तथा लोकतन्त्र में ही सभी के हित सुरक्षित रहते हैं। कवि कहता है—

लोकतन्त्र का रथ समता के पहियों पर चलता है।
मन्दिर कोई भी हो सब में, दीप वही जलता है।।

(6) राष्ट्रीय एकता के पक्षधर—गांधीजी ने भारत की समग्र जनता को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए जीवनपर्यन्त प्रयास किया।

(7) भावात्मक एकता से ओत-प्रोत—गांधीजी 'विश्वबन्धुत्व' एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओत-प्रोत थे। वे सभी को सुखी व समृद्ध देखना चाहते थे।

(8) हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्षधर—उन्होंने सारे जीवन हिन्दू और मुसलमानों को भाई-भाई की तरह रहने की प्रेरणा दी।

(9) हरिजनोद्धारक—अछूत कहे जानेवाले भारतीय भाइयों को उन्होंने गले लगाया और उनके उद्धार के लिए निरन्तर प्रयत्न करते रहे।

(10) स्वदेशी वस्तु एवं खादी को महत्त्व—गांधीजी ने स्वयं भी और अपने अनुयायियों को भी स्वदेशी वस्तुओं और खादी अपनाने की प्रेरणा दी—

खादी का प्रचार घर-घर में
अब थी यही लगन जीवन की।

(11) आत्मविश्वास के धनी—गांधीजी आत्मविश्वास से परिपूर्ण थे, उन्होंने जो कुछ भी किया, वह पूर्ण आत्मविश्वास के साथ किया और उसमें वे सफल भी हुए।

(12) सत्याग्रही—गांधीजी ने सत्य के बल पर पूरा भरोसा किया और अपने सत्याग्रह के बल पर ही उन्होंने अंग्रेजों को भारत छोड़कर ब्रिटेन चले जाने के लिए बाध्य कर दिया।

अन्तत: सार रूप में कहा जा सकता है कि जितने भी मानवोचित गुण हो सकते हैं, वे सब पूज्य महात्मा गांधी में विद्यमान थे। उनके निर्मल चरित्र पर उँगली उठाने का साहस किसी में है ही नहीं। उनकी उपलब्धियों और राष्ट्रीय महत्त्व को यदि कवि के दृष्टिकोण से देखें तो कवि की ये पंक्तियाँ उनके विषय में बिल्कुल सटीक बैठती हैं—

महत्ता हम सबों की क्या भला थी,
सभी उस वृद्ध माँझी की कला थी।

(v) 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर हर्षवर्धन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर हर्षवर्धन का चरित्र-चित्रण

© CHITRA PRAKASHAN

प्रस्तुत खण्डकाव्य के आधार पर सम्राट् हर्षवर्धन के चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं—

(1) आदर्श पुत्र एवं भाई—सम्राट् हर्षवर्धन सर्वप्रथम आदर्श पुत्र एवं भाई के रूप में हमारे सम्मुख आते हैं। अपने पिता की अस्वस्थता का समाचार पाकर वे शीघ्र ही शिकार से लौट आते हैं और उनका यथासम्भव उपचार करवाते हैं। दूसरी ओर वे अपनी माता के आत्मदाह का समाचार सुनकर व्याकुल हो उठते हैं। माँ से याचनापूर्ण शब्दों में वे कहते हैं—

मुझ मन्द-पुण्य को छोड़ न माँ तुम भी जाओ,
छोड़ो विचार यह, मुझे चरण से लिपटाओ।

इसी प्रकार बहन राज्यश्री को भी वे अग्निदाह से बचाते हैं और उसे सारा राज्य सौंपकर बहन के प्रति अपने प्रेम का परिचय देते हैं। बड़े भाई राज्यवर्धन के प्रति भी उनके मन में अपार स्नेह है—

बाहर चले जब राज्यवर्धन हर्ष पीछे चल पड़े,
ज्यों वन-गमन में राम के पीछे चले लक्ष्मण अड़े।

(2) लोक-हितैषी, योग्य एवं कुशल शासक—पिता और भाई की मृत्यु के पश्चात् हर्ष राजा बने। उनका शासन सुख, समृद्धि और शान्ति से परिपूर्ण था। वे सदैव प्रजा के कल्याण में लगे रहते थे और स्वयं को प्रजा का सेवक समझते थे। उनका मत था—

नहीं अधिकार नृप को पास रखे धन प्रजा का,
करे केवल सुरक्षा देश-गौरव की ध्वजा का।

हर्षवर्धन ने अनेक धर्म-सभाओं और विचार-गोष्ठियों का आयोजन करके समाज के विभिन्न वर्गों, धर्म-सम्प्रदायों और विचारधाराओं में भावात्मक समन्वय किया। उन्होंने अपने शासन का उद्देश्य बताते हुए कहा—

अखण्डित हो, व्यवस्थित हो सुरक्षित देश मेरा,
बहुत कुछ पूर्ण है, साकार है संकल्प मेरा।

(3) साहसी, पराक्रमी एवं धैर्यशाली—सम्राट् हर्षवर्धन अपने साहस, शौर्य एवं धैर्य के कारण विख्यात हैं। विदेशी आक्रान्ताओं से मातृभूमि की रक्षा करके उन्होंने अपने अपूर्व साहस का परिचय दिया था। सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में बाँधकर उन्होंने अपना पराक्रमी रूप प्रस्तुत किया था। उनके पिता ने मृत्यु के पूर्व उनसे यही कहा था—

हे महासत्त्वता ! राजपुत्रता से बढ़कर,
तुम तेजपुंज, तुम हो बल-विक्रम के दिनकर।

पिता की मृत्यु, माँ के अग्निदाह, बहनोई की मृत्यु और प्रिय भाई राज्यवर्धन की मृत्यु आदि सभी विकट संकटों को हर्ष ने अकेले झेला था। संकट की इन घड़ियों में भी उन्होंने कभी अपना धैर्य नहीं छोड़ा—

(अ) **क्रन्दन करती थी प्रजा, शान्त थे हर्ष धीर।**
(ब) **अविचल मन से सब क्लेश उन्होंने झेले,**
हर विपदा में, दुर्दिन में रहे अकेले।

(4) कर्त्तव्यनिष्ठ एवं धर्मपरायण—सम्राट् हर्ष ने आजीवन अपने कर्त्तव्य का पालन किया। प्रारम्भ में इच्छा न होते हुए भी उन्होंने अपने भाई के कहने पर राज्य का भार सँभाला और प्रत्येक संकटमय स्थिति में अपने कर्त्तव्य को निभाया। प्रजा के सुख, शान्ति और कल्याण के लिए ही वे प्रत्येक कार्य करते थे। बहन राज्यश्री को वनों में खोजकर वे अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हैं—

मैं स्वयं जाऊँगा बहन को ढूँढने वन प्रान्त में,
पाए बिना उसको न क्षण भर हो सकूँगा शान्त मैं।

हर्ष ने समस्त धर्मों के मध्य एकता स्थापित की थी। यह उनकी धर्मपरायणता का ही परिणाम था। उनकी आस्था प्रत्येक धर्म में थी; यथा—

मिले हैं आज सारे शाक्त, वैष्णव, शैव, वैदिक,
मिले हैं धर्म-दर्शन के, व्रती सब स्मार्त शाब्दिक।

(5) त्यागी, दानी एवं दृढ़-निश्चयी—हर्ष का जीवन त्याग, दान और दृढ़-निश्चय की गाथा है। छिन्न-भिन्न भारत को एक करने का दृढ़-निश्चय करके उन्होंने अपने क्षत्रिय धर्म का परिचय दिया था। भाई की मृत्यु का समाचार सुनकर उन्होंने जो प्रतिज्ञा की थी, उससे भी उनके दृढ़-निश्चय का पता चलता है; यथा—

लेकर चरण-रज आर्य की करता प्रतिज्ञा आज मैं,
निर्मूल कर दूँगा धरा से अधर्म गौंड-समाज मैं।

त्रिवेणी-संगम पर प्रयाग में प्रति पाँचवें वर्ष माघ महीने में सर्वस्व त्याग करने की घोषणा उनके त्यागी और दानी रूप का उत्कृष्ट प्रमाण है।

इस प्रकार हर्ष का चरित्र एक वीर योद्धा, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, त्याग-भावना से युक्त एक ऐसे महान् शासक का है, जिसके लिए प्रजा की सुख-सुविधा सर्वोपरि है और वह अपने मानवीय कर्त्तव्यों के प्रति भी निष्ठावान् है।

डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी ने हर्ष के सम्बन्ध में पूर्णत: उपयुक्त ही लिखा है कि ''उसकी सत्य-धर्मपरायणता, विद्यानुराग, सभ्यता और संस्कृति का सतत पोषण, उज्ज्वल चरित्र और जीवमात्र के प्रति करुण-भाव आदि गुण आज के दिग्भ्रान्त तरुणों और किशोरों को जीवन के सद्व्यय, सत्पथ और मानव-जीवन की ऊँचाइयों के प्रति निष्ठा की प्रेरणा दे सकते हैं।''

अन्तत: कवि के शब्दों में हम कह सकते हैं—

शौर्य था साकार नृप में अवतरित था ज्ञान,
मानते थे सब उन्हें राजर्षि यती समान।
था प्रजा के हेतु अर्पित, प्राण तन मन धन,
यज्ञ की आहुति सदृश था हर्ष का जीवन।।

अथवा

'त्यागपथी' खण्डकाव्य की किसी घटना का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : **'त्यागपथी' खण्डकाव्य की प्रमुख घटना**

पिता की अस्वस्थता का समाचार सुनकर राज्यवर्धन भी वापस लौट आए, किन्तु माता-पिता की मृत्यु के दु:खद समाचार को सुनकर उन्होंने वैराग्य धारण करने का निश्चय किया। हर्ष ने उन्हें बहुत समझाया कि वह (हर्ष) अकेले रह जाएँगे। दोनों भाइयों का वार्त्तालाप चल ही रहा था कि मालवराज द्वारा राज्यश्री (उनकी छोटी बहन) को बन्दी बनाने और उसके पति गृहवर्मन को मार डालने का समाचार मिला। राज्यवर्धन ने वैराग्य-भाव भूलकर कन्नौज की ओर प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचकर उन्होंने गौंड-नरेश को पराजित किया, परन्तु लौटते समय मार्ग में धोखे से उनकी हत्या कर दी गई। हर्षवर्धन को जब यह सूचना मिली कि राज्यवर्धन का वध कर दिया गया है तो वे विशाल सेना लेकर गौंड-नरेश से लड़ने के लिए चल पड़े, परन्तु तभी सेनापति भण्डि से उन्हें अपनी बहन के वन में जाने का समाचार मिला। यह समाचार पाकर हर्ष अपनी बहन को खोजने के लिए वन की ओर चल पड़े। वहाँ एक भिक्षु द्वारा उन्हें राज्यश्री के अग्नि-प्रवेश के लिए उद्यत होने का समाचार मिला। शीघ्र ही वहाँ पहुँचकर हर्ष ने राज्यश्री को बचा लिया और कन्नौज लौटकर अपनी बहन के नाम पर ही शासन चलाया।

(vi) 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : **'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के नायक श्रवण कुमार का चरित्र-चित्रण**

प्रस्तुत खण्डकाव्य में श्रवण कुमार की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार प्रस्तुत हुई हैं—

(1) मातृ-पितृ-भक्त—श्रवण कुमार एक आदर्श पुत्र है। वह अपने माता-पिता को ही परमेश्वर मानकर पूजता है। प्रात:काल से ही वह माता-पिता की सेवा प्रारम्भ कर देता है। काँवर में बैठाकर वह उन्हें देवगृहों और विभिन्न तीर्थों की यात्रा कराता है—

बिठलाकर उनको काँवर में, करता वह गुरु भार वहन।
देवगृहों, तीर्थों को जाता, सदा कराने शुभ दर्शन।।

दशरथ के बाण से आहत होकर भूमि पर पड़ा हुआ भी श्रवण कुमार अपने माता-पिता के प्यासे होने की चिन्ता करता रहता है।

(2) सत्यवादी—श्रवण की माता शूद्र व पिता वैश्य थे। दशरथ द्वारा ब्रह्महत्या की सम्भावना प्रकट करने पर श्रवण कुमार उनको स्पष्ट बता देता है कि वह ब्रह्मकुमार नहीं है—

''वैश्य पिता, माता शूद्रा थी, मैं यों प्रादुर्भूत हुआ।''

(3) संस्कारों को महत्त्व देनेवाला—श्रवण कुमार किसी के भी प्रति भेदभाव नहीं रखता। वह सच्चे अर्थों में समदर्शी है। वह कर्म, शील एवं संस्कारों को महत्त्व देता है। वह अपने जीवन की पवित्रता का रहस्य, संस्कारों के प्रभाव को ही मानता है—

''संस्कारों के सत् प्रभाव से, मेरा जीवन पूत हुआ।''

वह आगे कहता है—

विप्र द्विजेतर के शोणित में, अन्तर नहीं, रहे यह ध्यान।
नहीं जन्म से, संस्कार से, मानव को मिलता सम्मान।।

(4) सरल स्वभाव एवं क्षमाशील—श्रवण कुमार स्वभाव से सरल है। उसके मन में किसी के प्रति ईर्ष्या या द्वेष का भाव नहीं है। दशरथ के बाण से घायल होने पर भी, पास आए हुए दशरथ का वह सम्मान करता है।

(5) भाग्यवादी—श्रवण कुमार पूर्णत: भाग्यवादी है। किसी भी अच्छी-बुरी घटना को वह भाग्य का ही खेल मानता है। बाण से घातक रूप से घायल होने को भी वह भाग्य का दोष मानता है। वह कहता है—

''जो भवितव्य वही होता है, उसे सका कब कोई टाल।''

(6) आत्म-सन्तोषी—श्रवण का जीवन के प्रति कोई मोह नहीं है। वह स्वभाव से ही सन्तोषी है। उसे भोग व ऐश्वर्य की लेशमात्र भी कामना नहीं है। उसके मन में किसी को पीड़ा पहुँचाने का भाव ही जाग्रत नहीं होता। उसका कथन है—

© CHITRA PRAKASHAN

वन्य पदार्थों से ही होता
रहता, मम जीवन-निर्वाह।
ऋषि हूँ, नहीं किसी को पीड़ा
पहुँचाने की उर में चाह।।

श्रवण कुमार के चरित्र में मानवता के सभी उच्च आदर्शों का समन्वय हुआ है। वह सत्यवादी, क्षमाशील, सन्तोषी, सरल स्वभाववाला, मातृ-पितृभक्त, दयालु, त्यागी, तपस्वी, भाग्यवादी एवं भारतीय संस्कृति का प्रतीक है।

अस्तु; 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य का नायक भारतीय सदाचार और मर्यादा का ज्वलन्त आदर्श है।

अथवा

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य की किसी घटना का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : **'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य की प्रमुख घटना**

एक दिन गोधूलि वेला में महाराज दशरथ भोजन करने के बाद विश्राम कर रहे थे कि उनके मन में आखेट की इच्छा जाग्रत हुई। उन्होंने अपने सारथि को बुला भेजा और रात्रि के चतुर्थ पहर में आखेट हेतु प्रस्थान करने की इच्छा प्रकट की। रात्रि में सोते समय राजा ने स्वप्न में देखा था कि एक हिरन का बच्चा उनके बाण से मर गया है और हिरनी खड़ी हुई आँसू बहा रही है।

राजा दशरथ सूर्योदय से बहुत पहले ही रथ पर सवार होकर शिकार के लिए चल दिए। वे शीघ्र ही अपने इच्छित स्थान पर पहुँच गए। रथ से उतरकर वे घने वन में एक अन्धकारमय स्थान पर छिपकर बैठ गए। धनुष-बाण सँभाले हुए वे किसी वन्य पशु की प्रतीक्षा करने लगे।

इधर श्रवण कुमार के माता-पिता को प्यास लगी। उन्होंने श्रवण कुमार से जल लाने को कहा। श्रवण जल लेने के लिए नदी के तट पर गया और जल भरने के लिए कलश को नदी के जल में डुबोया। घड़े के शब्द को राजा दशरथ ने किसी वन्य पशु की आवाज समझा। उन्होंने तुरन्त शब्दभेदी बाण चला दिया। बाण श्रवण कुमार को लगा। श्रवण कुमार चीत्कार करता हुआ धरती पर गिर पड़ा। मानव-स्वर सुनकर राजा दशरथ चिन्तित हो उठे और 'प्रभु कल्याण कर' कहते हुए नदी के किनारे पर पहुँचे।

खण्ड 'ख'

8. (क) दिए गए संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए— 2 + 5 = 7

गुरुः विरजानन्दोपि कुशाग्रबुद्धिमिमं दयानन्दं त्रीणि वर्षाणि यावत् पाणिनेः अष्टाध्यायीमन्यान् च शास्त्राणि अध्यापयामास। समाप्तविद्यः दयानन्दः परमया श्रद्धया गुरुमवदत्-भगवन् अहम् अकिञ्चनतया तनुमनोभ्यां समं केवलं लवङ्गजातमेव समानीतवानस्मि। अनुगृह्णातु भावन् अङ्गीकृत्य मदीयामिमां गुरुदक्षिणाम्।

उत्तर : **सन्दर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के **'संस्कृत-खण्ड'** में संकलित **'महर्षिर्दयानन्दः'** पाठ से अवतरित है।

अनुवाद—गुरु विरजानन्द ने भी तीव्र बुद्धिवाले इस दयानन्द को तीन वर्ष तक पाणिनि की अष्टाध्यायी तथा अन्य शास्त्रों का अध्ययन कराया। विद्या समाप्त करके दयानन्द ने परम श्रद्धा से गुरु से कहा—"भगवन्! मैं निर्धन होने के कारण शरीर और मन के साथ केवल कुछ लौंग लाया हूँ। आप मेरी इस गुरु-दक्षिणा को स्वीकार करके मुझे अनुगृहीत करें।"

अथवा

आः तिष्ठ इदानीम्। कथं न दृष्टः केशवः? अहो ह्रस्वं केशवस्य। आ तिष्ठ इदानीम्। कथं न दृष्टः केशवः! अहो दीर्घत्वं केशवस्य। कथ न दृष्टः केशवः। अयं केशवः। कथं सर्वत्र शलायां केशवा एवं केशवाः दृश्यन्ते! किम इदानीं करिष्ये! भवतु, दृष्टम्। भो राजानः! एकेन एकः केशवः बध्यताम्। कथं स्वमेव पाशैर्बद्धा पतन्ति राजनः।

उत्तर : **सन्दर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के **'संस्कृत-खण्ड'** में संकलित **'दूतवाक्यम्'** नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद—अरे! अब ठहर! केशव क्यों नहीं दिखाई दे रहा है? अरे! केशव की सूक्ष्मता! अरे! अब ठहर जा। केशव क्यों नहीं दिखाई दिया! अरे! केशव की विशालता! केशव क्यों नहीं दिखाई दे रहा। यह केशव है। क्या इस सभा में केशव-ही-केशव दिखाई दे रहे हैं? अब मैं क्या करूँगा? अच्छा, समझ में आया। अरे राजाओ! एक राजा एक केशव को बाँधे। क्या स्वयं ही जाल में बँधे राजा गिर रहे हैं!

(ख) दिए गए श्लोकों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए— 2 + 5 = 7

न मे रोचते भद्रं वः उलूकस्याभिषेचनम्।
अक्रुद्धस्य मुखं पश्य कथं क्रुद्धो भविष्यति।।

उत्तर : **सन्दर्भ**—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक के **'संस्कृत-खण्ड'** में संकलित **'जातक-कथा'** नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद—यह महाशय मुझे अच्छा नहीं लगता (क्योंकि) अभिषेक के समय प्रसन्न इसके (भयंकर) मुख को देखो, क्रुद्ध होने पर कैसा होगा?

अथवा

सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेत् विद्यां विद्यार्थी व त्यजेत् सुखम्।

उत्तर : **सन्दर्भ**—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक के **'संस्कृत-खण्ड'** में संकलित **'सुभाषितरत्नानि'** नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद—सुख चाहनेवाले (व्यक्ति) को विद्या कहाँ और विद्या प्राप्त करनेवाले को सुख कहाँ? सुख की इच्छा करनेवाले को विद्या त्याग देनी चाहिए और विद्यार्थी को सुख त्याग देना चाहिए।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए— 2 + 2 = 4

(क) मूर्खाणां कालः कथं गच्छति?

उत्तर : मूर्खाणां कालः व्यसनेन, निद्रया कलहेन वा गच्छति।

(ख) मूलशंकरस्य उपनयनम् कदा अवभत्?

उत्तर : मूलशंकरस्य उपनयनम् अष्टये वर्षे अभवत्।

(ग) गौतमबुद्धः कान् सिद्धान्तान् अशिक्षयन्?

उत्तर : गौतमबुद्धः पञ्चशीलसिद्धान्तान् अशिक्षयन्।

(घ) का भाषा देवभाषा इति नाम्ना ज्ञाता?

उत्तर : संस्कृतभाषा देवभाषा इति नाम्ना ज्ञाता।

10. (क) 'शृंगार' रस अथवा 'वीर' रस की परिभाषा उदाहरणसहित लिखिए। 2

उत्तर : **शृंगार रस की परिभाषा**—नायक और नायिका के मन में संस्कार रूप में स्थित रति या प्रेम जब रस की अवस्था को पहुँचकर आस्वादन के योग्य हो जाता है तो वह 'शृंगार रस' कहलाता है।

उदाहरण—

दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुन्दर मन्दिर माहीं।
गावति गीत सबै मिलि सुन्दरि बेद जुवा जुरि बिप्र पढ़ाहीं।।
राम को रूप निहारति जानकि कंकन के नग की परछाहीं।
यातें सबै सुधि भूलि गई कर टेकि रही, पल टारत नाहीं।।

अथवा

वीर रस की परिभाषा—युद्ध अथवा किसी कठिन कार्य को करने के लिए हृदय में जो उत्साह जाग्रत होता है, उससे 'वीर रस' की निष्पत्ति होती है।

उदाहरण—

क्रुद्ध दशानन बीस भुजानि सो लै कपि रीछ अनी सर बट्टत।
लच्छन तच्छन रक्त किए दृग लच्छ विपच्छन के सिर कट्टत।।
मार पछारु पुकारे दुहूँ दल, रुण्ड झपट्टि दपट्टि लपट्टत।
रुण्ड लरै भट मत्थनि लुट्टत जोगिनि खप्पर ठट्टनि ठट्टत।।

(ख) 'रूपक' अलंकार अथवा 'दृष्टान्त' अलंकार की परिभाषा उदाहरणसहित लिखिए। 2

उत्तर : **रूपक अलंकार की परिभाषा**—"जहाँ उपमेय में उपमान का भेदरहित आरोप हो, वहाँ 'रूपक' अलंकार होता है।" 'रूपक' अलंकार में उपमेय और उपमान में कोई भेद नहीं रहता।

© CHITRA PRAKASHAN

उदाहरण— ओ चिंता की पहली रेखा,
अरे विश्व-वन की व्याली।
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण,
प्रथम कम्प-सी मतवाली।

अथवा

दृष्टान्त अलंकार की परिभाषा—''जहाँ उपमेय, उपमान के साधारण धर्म में भिन्नता होते हुए भी बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव से कथन किया जाए, वहाँ 'दृष्टान्त' अलंकार होता है।'' इसमें प्रथम पंक्ति का प्रतिबिम्ब द्वितीय पंक्ति में झलकता है।

उदाहरण— दुसह दुराज प्रजान को, क्यौं न बढ़ै दुःख-द्वंद।
अधिक अँधेरो जग करत, मिलि मावस रवि-चंद॥

(ग) 'सोरठा' अथवा 'हरिगीतिका' छन्द का लक्षणसहित उदाहरण लिखिए। 2

उत्तर : सोरठा छन्द की परिभाषा—यह अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसके प्रथम और तृतीय चरण में 11-11 मात्राएँ तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। पहले और तीसरे चरण के अन्त में गुरु-लघु आते हैं और कहीं-कहीं तुक भी मिलती है। यह दोहा छन्द के विपरीत होता है।

उदाहरण— ऽ। ।ऽ।। ऽ । ।।। ।।। ऽ ।। ।।।
नील सरोरुह स्याम, तरुन अरुन बारिज नयन।
करउ सो मम उर धाम, सदा छीरसागर सयन॥

अथवा

हरिगीतिका छन्द की परिभाषा—यह सम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं। 16 और 12 मात्राओं पर यति होती है। प्रत्येक चरण के अन्त में रगण (ऽ। ऽ) आना आवश्यक है।

उदाहरण— । । ऽ। ऽऽ ऽ।ऽ ।। ।। ।ऽ ऽऽ ।ऽ
खग-वृन्द सोता है अतः कल कल नहीं होता वहाँ।
बस मंद मारुत का गमन ही मौन है खोता जहाँ॥
इस भाँति धीरे से परस्पर कह सजगता की कथा।
यों दीखते हैं वृक्ष ये हों विश्व के प्रहरी यथा॥

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए— 2 + 7 = 9

(क) विज्ञान : वरदान या अभिशाप
(ख) वन संरक्षण का महत्त्व
(ग) राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता
(घ) बढ़ती जनसंख्या का कुप्रभाव
(ङ) स्वच्छ भारत अभियान।

उत्तर :

(क) विज्ञान : वरदान या अभिशाप

प्रस्तावना—आधुनिक युग में विज्ञान के नवीन आविष्कारों ने विश्व में क्रान्ति-सी उत्पन्न कर दी है। विज्ञान के बिना मनुष्य के स्वतन्त्र अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती। विज्ञान की सहायता से मनुष्य प्रकृति पर निरन्तर विजय प्राप्त करता जा रहा है। आज से कुछ वर्ष पूर्व विज्ञान के आविष्कारों की चर्चा से ही लोग आश्चर्यचकित हो जाया करते थे; परन्तु आज वही आविष्कार मनुष्य के जीवन में पूर्णतया घुल-मिल गए हैं। विज्ञान ने हमें अनेक सुख-सुविधाएँ प्रदान की हैं, किन्तु साथ ही विनाश के विविध साधन भी जुटा दिए हैं। इस स्थिति में यह प्रश्न विचारणीय हो गया है कि विज्ञान मानवकल्याण के लिए कितना उपयोगी है? वह समाज के लिए वरदान है या अभिशाप?

विज्ञान : वरदान के रूप में—विज्ञान मानव-जीवन के लिए वरदान सिद्ध हुआ है। उसकी वरदायिनी शक्ति ने मानव को अपरिमित सुख-समृद्धि प्रदान की है; यथा—

(क) परिवहन के क्षेत्र में—कुछ समय पहले लम्बी यात्राएँ दुरूह स्वप्न-सी लगती थीं, किन्तु आज रेल, मोटर और वायुयानों ने लम्बी यात्राओं को अत्यन्त सुगम व सुलभ कर दिया है। पृथ्वी पर ही नहीं, आज के वैज्ञानिक साधनों के द्वारा मनुष्य ने चन्द्रमा पर भी अपने कदमों के निशान बना दिए हैं।

(ख) संचार के क्षेत्र में—टेलीफोन, टेलीग्राम, टेलीप्रिण्टर, टैलेक्स, फैक्स, ई-मेल आदि के द्वारा क्षणभर में एक स्थान से दूसरे स्थान को सन्देश पहुँचाए जा सकते हैं। रेडियो और टेलीविजन द्वारा कुछ ही क्षणों में किसी समाचार को विश्वभर में प्रसारित किया जा सकता है।

(ग) चिकित्सा के क्षेत्र में—चिकित्सा के क्षेत्र में तो विज्ञान वास्तव में वरदान सिद्ध हुआ है। आधुनिक चिकित्सा-पद्धति इतनी विकसित हो गई है कि अन्धे को आँखें और विकलांगों को अंग मिलना अब असम्भव नहीं है। कैंसर, टी०बी०, हृदयरोग जैसे भयंकर और प्राणघातक रोगों पर विजय पाना विज्ञान के माध्यम से ही सम्भव हो सका है।

(घ) खाद्यान्न के क्षेत्र में—आज हम अन्न उत्पादन एवं उसके संरक्षण के मामले में आत्मनिर्भर होते जा रहे हैं। इसका श्रेय आधुनिक विज्ञान को ही है। विभिन्न प्रकार के उर्वरकों, कीटनाशक दवाओं, खेती के आधुनिक साधनों तथा सिंचाई सम्बन्धी कृत्रिम व्यवस्था ने खेती को अत्यन्त सरल व लाभदायक बना दिया है।

(ङ) उद्योगों के क्षेत्र में—उद्योगों के क्षेत्र में विज्ञान ने क्रान्तिकारी परिवर्तन किए हैं। विभिन्न प्रकार की मशीनों ने उत्पादन की मात्रा में कई गुना वृद्धि की है।

(च) दैनिक जीवन में—हमारे दैनिक जीवन का प्रत्येक कार्य अब विज्ञान पर ही आधारित है। विद्युत् हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बन गई है। बिजली के पंखे, कुकिंग गैस स्टोव, फ्रिज आदि के निर्माण ने मानव को सुविधापूर्ण जीवन का वरदान दिया है। इन आविष्कारों से समय, शक्ति और धन की पर्याप्त बचत हुई है।

विज्ञान : एक अभिशाप के रूप में—विज्ञान का एक दूसरा पहलू भी है। विज्ञान ने मनुष्य के हाथ में बहुत अधिक शक्ति दे दी है, किन्तु उसके प्रयोग पर कोई अंकुश नहीं लगाया है। स्वार्थी मानव इस शक्ति का प्रयोग जितना रचनात्मक कार्यों के लिए कर रहा है, उससे अधिक प्रयोग विनाशकारी कार्यों के लिए भी कर रहा है।

विज्ञान : वरदान या अभिशाप?—विज्ञान के विषय में उक्त दोनों दृष्टियों से विचार करने के बाद यह बात पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है कि एक ओर विज्ञान हमारे लिए कल्याणकारी है तो दूसरी ओर विनाश का कारण भी; किन्तु विनाश के लिए विज्ञान को ही उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। विज्ञान तो एक शक्ति है, जिसका उपयोग अच्छे और बुरे दोनों तरह के कार्यों के लिए किया जा सकता है। यह एक तलवार है, जिससे शत्रु का गला भी काटा जा सकता है और मूर्खतावश अपना भी। विनाश करना विज्ञान का दोष नहीं है, अपितु मनुष्य के असंस्कृत मन का दोष है। यदि मनुष्य अपनी प्रवृत्तियों को रचनात्मक दिशा में लगाएँ तो विज्ञान एक बड़ा वरदान है; किन्तु जब तक मनुष्य मानसिक विकास की उस अवस्था तक नहीं पहुँचता, तब तक विज्ञान के माध्यम से जितना भी विनाश होगा, उसे अभिशाप ही समझा जाएगा।

उपसंहार—विज्ञान का वास्तविक लक्ष्य है—मानव-हित और मानव-कल्याण। यदि विज्ञान अपने इस उद्देश्य की दिशा में पिछड़ जाता है तो विज्ञान को त्याग देना ही हितकर होगा।

(ख) वन संरक्षण का महत्त्व

वन : मानव-जीवन के संरक्षक—मानव-जीवन का एक-एक पल वनों का ऋणी है। जन्म से लेकर मृत्यु तक वे हमारी सहायता करते हैं, रक्षा करते हैं। जन्म के समय यदि पालना-हिंडोला लकड़ी का होता है तो मृत्यु के समय शरीर को ढोनेवाला विमान भी लकड़ी का होता है। वृक्षों की लकड़ी जलावन से लेकर फैक्ट्रियों में विभिन्न रूपों में काम आती है। वनों से वर्षा का जल खेती योग्य भूमि में पड़कर हमारे पेट भरने को अनाज उपजाता है। हमारी—रोटी, कपड़ा और मकान जीवन की ये तीनों मूलभूत आवश्यकताएँ वन ही पूरी करते हैं। मनुष्य यदि जीवित है तो वनों की कृपा पर।

© CHITRA PRAKASHAN

वन-संरक्षण की आवश्यकता—वन हमें दैनिक जीवन में प्रयोग में आनेवाली अनेकानेक वस्तुएँ उपलब्ध कराते हैं। रबड़, गोंद, फल-फूल, कागज, पत्ते, छाल आदि सब इन्हीं से प्राप्त होते हैं। वन प्राकृतिक सम्पदा के भण्डार हैं। वनों का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है—वातावरण को शुद्ध रखना, वर्षा लाना तथा बाढ़ रोकना। वैज्ञानिक परीक्षण बताते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में मौसमी अनियमितता आने का कारण केवल वनों का अन्धाधुन्ध काटा जाना ही है। देश में आज 24.56% भू-भाग पर वन हैं, जबकि 33% भू-भाग पर वनों की आवश्यकता है। सूखा और अकाल का कारण भी वनों की कटाई ही है।

वृक्षारोपण और वन महोत्सव—जीवन में स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों के बढ़ते जाने से आज फिर मानव को वृक्षों के होने का महत्त्व समझ में आया है। राज्य में एक विशेष तिथि पर पौधे को रोपना 'वन महोत्सव' के आयोजन का मुख्य अंग है। आज यह एक अभियान का रूप ले चुका है। राष्ट्रीय राजमार्गों पर सरकार की ओर से वृक्षारोपण का कार्य सम्पन्न कराया जाता है। स्कूल, कॉलेजों, आवासीय कालोनियों आदि में भी इस ओर बड़ा ध्यान दिया जा रहा है। हर्ष का विषय है कि लोग आज इसका महत्त्व समझने लगे हैं।

वायु-प्रदूषण और जल-सन्तुलन में वनों की उपयोगिता—वन प्राणवायु और जल के स्रोत हैं। वृक्ष बड़ी मात्रा में ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जो हमारे साँस लेने, जीवित रहने के काम आती है। आज शहरों में वाहनों, फैक्ट्रियों आदि से उत्पन्न धुआँ वायु-प्रदूषण का कारण बना हुआ है। जितना प्रदूषण बढ़ रहा है, उतनी ही वृक्षारोपण की आवश्यकता बढ़ती जा रही है।

जल-सन्तुलन के लिए भी वनों की उपयोगिता कम नहीं है। एक ओर घने वृक्ष जहाँ वर्षा लाते हैं, वहीं दूसरी ओर मजबूत वृक्ष बाढ़ रोकते हैं। वृक्ष भूमि को मरुस्थल बनने से रोकते हैं। ये नमी सोखकर भूमि की भीतरी परत तक पहुँचाते हैं। इस तरह भू-गर्भ जल का स्तर भी बढ़ाते हैं। भूमि की नमी उसकी उर्वरा शक्ति बढ़ाती है।

प्राकृतिक स्वरूप के रक्षक—वन हमारी सृष्टि के प्राकृतिक स्वरूप की रक्षा करते हैं। वैज्ञानिक प्रगति के नाम पर अनेक वन काटकर मनुष्य ने आज चारों ओर कंक्रीट के जंगल खड़े कर दिए हैं। वनों के कटते जाने से प्राकृतिक पदार्थों; जैसे लकड़ी, कोयला, गोंद आदि का अभाव होता जा रहा है। चारों ओर अधिक-से-अधिक इन वस्तुओं को जमा करके रख लेने की आपाधापी मची हुई है। पशु-पक्षियों के घर उजाड़ दिए गए हैं। अब यदि वे नगर की ओर भागते हैं तो उन्हें मार डाला जाता है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो हम मानव अपनी ही गलतियों से रहने योग्य प्रकृति के हरे-भरे सौन्दर्य और विविध प्रजातियों के पशु-पक्षियों को देखने को भी तरसेंगे। सृष्टि के स्वाभाविक स्वरूप की रक्षा वन ही करते हैं।

वन रहेंगे तो हम रहेंगे—यदि हमने जनसंख्या के अनुपात में वनों का रोपण न किया, उन्हें काटकर, जलाकर नष्ट करना बन्द न किया तो जिस प्रकार आज कुछ पशु-पक्षियों की प्रजातियाँ विलुप्त हो गई हैं, उसी प्रकार से 'मानव' नाम का यह प्राणी भी अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों में पड़कर अपने अस्तित्व को मिटा लेगा। इस प्रकार वनों के महत्त्व और उपयोगिता को ध्यान में रखकर जीवन जीना होगा और यह गाँठ बाँधनी होगी कि 'वन रहेंगे तो हम रहेंगे।'

(ग) राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता

राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय—राष्ट्रीय एकता का अभिप्राय है—सम्पूर्ण भारत की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और वैचारिक एकता। हमारे कर्मकाण्ड, पूजा-पाठ, खान-पान, रहन-सहन और वेशभूषा में अन्तर हो सकता है, किन्तु हमारे राजनैतिक और वैचारिक दृष्टिकोण में प्रत्येक दृष्टि से एकता की भावना दृष्टिगोचर होती है। इस प्रकार अनेकता में एकता ही भारत की प्रमुख विशेषता है।

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता—राष्ट्र की आन्तरिक शान्ति, सुव्यवस्था और बाहरी शत्रुओं से रक्षा के लिए राष्ट्रीय एकता परम आवश्यक है। यदि हम भारतवासी किसी कारणवश छिन्न-भिन्न हो गए तो हमारी पारस्परिक फूट का लाभ उठाकर अन्य देश हमारी स्वतन्त्रता को हड़पने का प्रयास करेंगे।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में बोलते हुए भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा था—''जब-जब भी हम असंगठित हुए, हमें आर्थिक और राजनैतिक रूप में इसकी कीमत चुकानी पड़ी। जब-जब भी विचारों में संकीर्णता आई, आपस में झगड़े हुए। जब कभी भी नए विचारों से अपना मुख मोड़ा, हानि ही हुई और हम विदेशी शासन के अधीन हो गए।''

राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधाएँ : कारण और निवारण—राष्ट्रीय एकता की भावना का अर्थ मात्र यही नहीं है कि हम एक राष्ट्र से सम्बद्ध हैं। राष्ट्रीय एकता के लिए एक-दूसरे के प्रति भाईचारे की भावना भी आवश्यक है। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पश्चात् हमने सोचा था कि अब पारस्परिक भेदभाव की खाई पट जाएगी, किन्तु साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता, जातीयता, अज्ञानता और भाषागत अनेकता ने आज भी पूरे देश को आक्रान्त कर रखा है।

राष्ट्रीय एकता को छिन्न-भिन्न कर देनेवाले कारकों को जानना आवश्यक है, जिससे उनको दूर करने का प्रयास किया जा सके। इसके कारण और निवारण निम्नलिखित हैं—

(क) साम्प्रदायिकता—राष्ट्रीय एकता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा साम्प्रदायिकता की भावना है। साम्प्रदायिकता एक ऐसी बुराई है, जो मानव-मानव में फूट डालती है, दो दोस्तों के बीच घृणा और भेद की दीवार खड़ी करती है, भाई को भाई से अलग करती है और अन्त में समाज के टुकड़े कर देती है। दुर्भाग्य से इस रोग को समाप्त करने के लिए जितना अधिक प्रयास किया गया है, यह रोग उतना ही अधिक बढ़ता गया है। स्वार्थ में लिप्त राजनीतिज्ञ सम्प्रदाय के नाम पर भोले-भाले लोगों की भावनाओं को भड़काकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे रहे हैं; परिणामत: देश का वातावरण विषाक्त होता जा रहा है।

यदि राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे रखना है तो साम्प्रदायिक विद्वेष, स्पर्द्धा, ईर्ष्या आदि राष्ट्र-विरोधी भावों को अपने मन से दूर रखना होगा और देश में साम्प्रदायिक सद्भाव जाग्रत करना होगा। साम्प्रदायिक सद्भाव से तात्पर्य यह है कि हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, पारसी, जैन, बौद्ध आदि सभी मतावलम्बी भारतभूमि को अपनी मातृभूमि के रूप में सम्मान देते हुए परस्पर स्नेह और सद्भाव के साथ रहें। यह राष्ट्रीयता के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है।

©CHITRA PRAKASHAN

उर्दू के प्रसिद्ध शायर इकबाल ने धार्मिक और साम्प्रदायिक एकता की दृष्टि से अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा था—

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा।।

धार्मिक एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने धर्म-ग्रन्थों के वास्तविक सन्देश को समझें, उनके स्वार्थपूर्ण अर्थ न निकालें। विभिन्न धर्मों के आदर्श सन्देशों को संगृहीत किया जाए। प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में उनके अध्ययन की विधिवत् व्यवस्था की जाए, जिससे भावी पीढ़ी उन्हें अपने आचरण में उतार सके और संसार के समक्ष ऐसा उदाहरण प्रस्तुत कर सके कि वह सभी धर्मों और सम्प्रदायों को महान् मानती है एवं उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखती है।

(ख) भाषागत विवाद—भारत बहुभाषी राष्ट्र है। देश के विभिन्न प्रान्तों की अलग-अलग बोलियाँ और भाषाएँ हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी भाषा और उस भाषा पर आधारित साहित्य को ही श्रेष्ठ मानता है। इससे भाषा पर आधारित विवाद खड़े हो जाते हैं तथा राष्ट्र की अखण्डता भंग होने के खतरे बढ़ जाते हैं।

यदि कोई व्यक्ति अपनी मातृभाषा के मोह के कारण दूसरी भाषा का अपमान या उसकी अवहेलना करता है तो वह राष्ट्रीय एकता पर ही प्रहार करता है। होना तो यह चाहिए कि अपनी मातृभाषा को सीखने के बाद हम संविधान में स्वीकृत अन्य प्रादेशिक भाषाओं को भी सीखें तथा राष्ट्रीय एकता की भावना के विकास में सहयोग प्रदान करें।

(ग) प्रान्तीयता या प्रादेशिकता की भावना—प्रान्तीयता या प्रादेशिकता की भावना भी राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती है। राष्ट्र एक सम्पूर्ण इकाई है। कभी-कभी यदि किसी अंचल-विशेष के निवासी अपने पृथक् अस्तित्व की माँग करते हैं तो राष्ट्रीयता की परिभाषा को सही रूप में न समझने के कारण ही वे ऐसा करते हैं। इस प्रकार की माँग करने से राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का विचार ही समाप्त हो जाता है।

भारत के सभी प्रान्त राष्ट्रीयता के सूत्र में आबद्ध हैं; अत: उनमें अलगाव सम्भव नहीं है। राष्ट्रीय एकता के इस प्रमुख तत्त्व को दृष्टि से ओझल नहीं होने देना चाहिए।

राष्ट्रीय एकता की दिशा में हमारे प्रयास—हमारे देश के विचारक, साहित्यकार, दार्शनिक एवं समाज-सुधारक अपनी-अपनी सीमाओं में निरन्तर इस बात के लिए प्रयत्नशील हैं कि देश में भाईचारे और सद्‌भावना का वातावरण बने, अलगाव की भावनाएँ, पारस्परिक तनाव और विद्वेष की दीवारें समाप्त हों। फिर भी इस आग में कभी पंजाब सुलग उठता है, कभी बिहार, कभी महाराष्ट्र, कभी गुजरात तो कभी उत्तर प्रदेश। अप्रिय घटनाओं की पुनरावृत्ति हमें इस बात का संकेत देती है कि हम टकराव और बिखराव पैदा करनेवाले तत्त्वों को रोक पाने में सफल नहीं हो पा रहे हैं। इन समस्याओं का समाधान केवल राष्ट्रनेताओं अथवा प्रशासनिक अधिकारियों के स्तर पर ही नहीं हो सकता, वरन् इसके लिए हम सबको मिल-जुलकर प्रयास करने होंगे।

उपसंहार—संक्षेप में यह कहना उचित होगा कि राष्ट्रीय एकता की भावना एक श्रेष्ठ भावना है और इस भावना को उत्पन्न करने के लिए हमें स्वयं को सबसे पहले मनुष्य समझना होगा। मनुष्य एवं मनुष्य में असमानता की भावना ही संसार में समस्त विद्वेष एवं विवाद का कारण है। इसलिए जब तक हममें मानवीयता की भावना का विकास नहीं होता, तब तक मात्र उपदेशों, भाषणों एवं राष्ट्र-गीत के माध्यम से ही राष्ट्रीय एकता का भाव उत्पन्न नहीं हो सकता।

(घ) बढ़ती जनसंख्या का कुप्रभाव

प्रस्तावना (जनसंख्या विस्फोट)—भारत प्राकृतिक वैभव सम्पन्न देश है। यहाँ की शस्यश्यामला धरती हर एक को अपनी ओर आकर्षित करती है। देश की स्वतन्त्रता और विभाजन के पश्चात् सन् 1951 में हुई प्रथम जनगणना में हमारी जनसंख्या 36,10,88,400 थी, जो आज बढ़कर 121 करोड़ (2011 की जनगणना के अनुसार) से भी अधिक हो चुकी है। जनसंख्या के इस तीव्र गति से बढ़ने को ही **जनसंख्या विस्फोट** कहा जाता है। जनसंख्या किसी भी राष्ट्र का अनिवार्य तत्त्व है। देश के संसाधनों के अनुपात में सीमित जनसंख्या देश के आर्थिक विकास के संवर्द्धन में सहायक होती है, इसलिए उसे किसी भी देश के साधन और साध्य दोनों माना जाता है। देश का कोई घटक चाहे कितने भी महत्त्व का क्यों न हो, परन्तु अति किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती। जनसंख्या के विषय में भी यह बात लागू होती है। वर्तमान में भारत की बढ़ती जनसंख्या चिन्ता का विषय बनी हुई है।

भारत में जनसंख्या विस्फोट की वर्तमान स्थिति—आज जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। आधुनिक भारत में जिस तीव्रता के साथ जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, आनेवाले समय में यह और भी विस्फोटक हो जाएगी। अनुमान है कि सन् 2026 ई० तक भारत की जनसंख्या बढ़कर लगभग 1·5 अरब हो जाएगी, वर्ष 2030 तक 1·53 तथा वर्ष 2060 तक यह 1·7 अरब हो जाएगी। यह जनसंख्या वृद्धि किसी विस्फोट से कम नहीं है। इसने देश के कर्णधारों को चिन्ता में डाल दिया है। आज जनसंख्या के स्तर पर भारत विश्व में दूसरे स्थान पर आता है, परन्तु सन् 2030 ई० तक इसके चीन को पछाड़कर प्रथम स्थान पर पहुँच जाने की सम्भावना है। यह स्थिति चौंकानेवाली एवं अत्यन्त भयावह है। आँकड़ों के अनुसार चीन की वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर जहाँ 0·5 प्रतिशत है, वहीं हम भारतीयों की जनसंख्या वृद्धि दर 1·63 प्रतिशत प्रतिवर्ष है। विश्व में प्रति मिनट जहाँ कुल 150 शिशु जन्म लेते हैं, उनमें से 60 शिशु अकेले भारत में जन्म लेते हैं।

जनसंख्या विस्फोट के कारण—भारत में आज भी बच्चों का जन्म ईश्वर की देन माना जाता है। समाज का पढ़ा-लिखा वर्ग भी इस तथ्य को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं होता कि जनसंख्या वृद्धि को हमारे द्वारा रोका जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में तो लोगों का यह तर्क होता है कि जितने हाथ होंगे, उतना ही काम भी बढ़ेगा, लेकिन वह इस तथ्य को भूल जाते हैं कि दो हाथ के साथ एक पेट भी बढ़ेगा, जिसकी अपनी आवश्यकताएँ होंगी। अन्धविश्वास और अशिक्षा के अतिरिक्त जनसंख्या वृद्धि के अन्य विशेष कारण भी हैं; जैसे—बाल-विवाह, बहुविवाह, दरिद्रता, मनोरंजन के साधनों का अभाव, गर्म जलवायु, रूढ़िवादिता, ग्रामीण क्षेत्रों में सन्तति-निरोध की सुविधाओं का कम प्रचार होना, परिवार-नियोजन के नवीनतम साधनों की अनभिज्ञता एवं वंशवृद्धि के लिए पुत्र की अनिवार्यता आदि।

जनसंख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि अथवा विस्फोट के परिणाम—भारत की वर्तमान आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक समस्याओं का मुख्य कारण बढ़ती हुई जनसंख्या है। 'ऋग्वेद' में कहा गया है—"**जहाँ प्रजा का आधिक्य होगा, वहाँ निश्चय ही दुःख एवं कष्ट की मात्रा अधिक होगी।**" यही कारण है कि आज भारत में सर्वत्र अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, निम्न जीवन-स्तर, सामाजिक कलह, अस्वस्थता एवं खाद्यान्न-संकट आदि अनेकानेक समस्याएँ निरन्तर बढ़ रही हैं। निश्चय ही जनसंख्या का यह विस्फोट भारत के लिए अभिशाप है। यदि जनसंख्या वृद्धि वर्तमान गति से होती रही तो पाँच-सौ वर्ष पश्चात् मनुष्यों को पृथ्वी पर खड़े होने की जगह भी नहीं मिल पाएगी। इसी बात को प्रसिद्ध हास्यकवि **काका हाथरसी** ने अपनी विनोदपूर्ण शैली में इस प्रकार लिखा है—

> **यदि यही रहा क्रम बच्चों के उत्पादन का,**
> **तो कुछ सवाल आगे आएँगे बड़े-बड़े।**
> **सोने को किंचित जगह धरा पर मिले नहीं,**
> **मजबूरन हम तुम सब सोएँगे खड़े-खड़े।**

हमारे देशवासी जनसंख्या की वृद्धि से होनेवाली हानियों के प्रति आज भी लापरवाह हैं। निश्चित ही जनसंख्या की वृद्धि का यदि यही क्रम रहा तो मानव-जीवन अत्यधिक संघर्षपूर्ण एवं अशान्त हो जाएगा।

जनसंख्या आज अति संवेदनशील मुद्दा बन चुका है। निरन्तर जनसंख्या-वृद्धि से मानव की आवश्यकताओं और संसाधनों की पूर्ति करना असम्भव होता जा रहा है। निरन्तर जीवन-मूल्यों में गिरावट आती जा रही है। अमीर और अमीर तथा गरीब और गरीब होते जा रहे हैं। अमीर-गरीब के बीच की खाई बढ़ती जा रही है। पर्यावरण विषाक्त होने में एक मुख्य कारण जनसंख्या विस्फोट भी है। इसलिए जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

जनसंख्या वृद्धि नियन्त्रण/निवारण के उपाय—यदि हम अपने देश को उन्नति-पथ पर अग्रसर करना चाहते हैं तो सर्वप्रथम हमें जनसंख्या वृद्धि/विस्फोट की समस्या का निवारण करना होगा। समय रहते यदि इन समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो निरक्षरता, बाल-मृत्यु, रोग, प्रदूषण, बेरोजगारी, नगरीकरण, वर्ग-संघर्ष आदि समस्याएँ विस्तृत होकर हमारे अस्तित्व को ही हिलाकर रख देंगी। सर्वप्रथम, बच्चे ईश्वर की देन हैं, इस अन्धविश्वासपूर्ण मानसिकता को बदलना होगा तथा जनसंख्या नियन्त्रित करनेवाले साधनों को अपनाना होगा। जनसंख्या-नियन्त्रण करने का सर्वोत्तम उपाय ब्रह्मचर्य-पालन है, परन्तु इस भौतिकवादी युग में इसका पालन करना सम्भव प्रतीत नहीं होता।

जनसंख्या विस्फोट को रोकने के लिए भारत-सरकार पूर्णतया गम्भीर है तथा अनेक प्रभावी कार्यक्रम चला रही है। यह कार्य अनेक सरकारी संस्थाओं, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं द्वारा किया जा रहा है। परिवार कल्याण कार्यक्रमों तथा संचार माध्यमों द्वारा लोगों को जनसंख्या वृद्धि के प्रति सचेत किया जा रहा है। प्रतिवर्ष 11 जुलाई को 'विश्व जनसंख्या दिवस' मनाया जाता है, जो जनसंख्या को नियन्त्रित रखने के लिए लोगों को शिक्षित और जागरूक

© CHITRA PRAKASHAN

करने के उद्देश्य से मनाया जाता है। जनसंख्या-विस्फोट रोकने के कुछ उपाय निम्नलिखित हैं—

- दो बच्चों के मापदण्डों को अपनाना।
- लड़के-लड़कियों को देर से विवाह के लिए प्रोत्साहित करना।
- परिवार-नियोजन कार्यक्रमों एवं साधनों का व्यापक प्रचार-प्रसार करना व अपनाना।
- अधिक बच्चों को जन्म देनेवाले माता-पिता को हतोत्साहित करना तथा उन्हें विभिन्न शासकीय सुविधाओं से वंचित रखने का प्रावधान करना, चाहे वह किसी भी वर्ग-जाति के क्यों न हों।
- बाल-विवाह एवं बहुविवाह जैसी कुप्रथाओं पर रोक लगाना इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण सम्बन्धी योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए प्रधानमन्त्री की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग नियुक्त करने का भी प्रावधान है, जिससे जनसंख्या-विस्फोट पर रोक लगाई जा सकेगी। आज यह सन्तोष का विषय है कि भारत सरकार इस दिशा में पर्याप्त सकारात्मक कदम उठा रही है।

उपसंहार—आज भारतवर्ष में जनसंख्या-विस्फोट को रोकने के लिए नित्य नए अभियान चलाए जा रहे हैं। बाल-विवाह जैसी कुप्रथा अब लगभग समाप्त हो गई है। चिकित्सा-क्षेत्र में नवीन पद्धतियाँ आ गई हैं, जनता गर्भ-निरोध के साधनों के प्रति जागरूक व भयरहित हुई है। यदि भारतवासी समझदारी से काम लेकर जनसंख्या वृद्धि रोकने में सहायक रहे और सरकार इस विषय में प्रयत्नशील रहे तो निश्चित ही एक दिन जनसंख्या-विस्फोट को रोका जा सकेगा तथा हमारा देश पुन: वैभवसम्पन्न और शस्य-श्यामलावाली अनुभूति से युक्त होगा।

(ङ) स्वच्छ भारत अभियान

प्रस्तावना—भारत गरीब मजदूर-किसानों का देश है। दरिद्रता अर्थात् गरीबी अस्वच्छता अर्थात् गन्दगी में बसती है; क्योंकि गन्दगी हमारे भीतर और वातावरण में नकारात्मकता का संचार करती है। नकारात्मकता व्यक्ति को उसके पुरुषार्थ से रोकती है और पुरुषार्थहीन व्यक्ति के पास दरिद्रता स्वयं ही आ जाती है। इसलिए सुख-समृद्धि से परिपूर्ण समाज की स्थापना के लिए स्वच्छता अनिवार्य है।

यदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी देखें तो यह सर्वविदित है कि गन्दगी रोगों के फैलने का सबसे मुख्य कारण है। गन्दगी के रहते जब व्यक्ति स्वस्थ ही न रहेगा, तब वह काम भी क्या करेगा और निरुद्यमी के पास लक्ष्मी नहीं आती, यह स्वत: प्रमाणित शाश्वत सत्य है।

© CHITRA PRAKASHAN

स्वच्छता के महत्त्व को समझते हुए ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वच्छता पर विशेष बल दिया, किन्तु उनकी स्वच्छ भारत की संकल्पना जनान्दोलन न बन सकी। स्वतन्त्रता की अर्द्धशती बीते भी एक लम्बा अन्तराल हो गया, किन्तु गांधीजी की स्वच्छ भारत की संकल्पना परवान न चढ़ सकी। माननीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदीजी ने उनकी इस संकल्पना को साकार करने के लिए 'स्वच्छ भारत अभियान' का बिगुल फूँका है।

मोदीजी की स्वच्छ भारत की संकल्पना—माननीय मोदीजी की स्वच्छ भारत अभियान की संकल्पना यह है कि देश के प्रत्येक शहरी और ग्रामीण परिवार में एक स्वच्छ शौचालय हो, जिन घर-परिवारों में स्थानाभाव के कारण शौचालय बनाया जाना सम्भव न हो, वहाँ पर सुलभ सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण किया जाए। देश के प्राथमिक से लेकर उच्चशिक्षा तक के प्रत्येक विद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिए स्वच्छ और पृथक्-पृथक् शौचालय हों। उनकी इस संकल्पना से जहाँ सिर पर मैला ढोने की अमानवीय प्रथा समाप्त होगी, वहीं देश की उन करोड़ों महिलाओं को सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर प्राप्त होगा, जिनको खुले में शौच के लिए जाना पड़ता है। उन बालिकाओं के विद्यालय जाने का मार्ग प्रशस्त होगा, जो विद्यालयों में अलग शौचालय की व्यवस्था न होने के कारण विद्यालय नहीं जा पातीं।

मोदीजी की स्वच्छ भारत अभियान की संकल्पना केवल शौचालयों के निर्माण तक ही सीमित नहीं है। उनका प्रयास है कि देश का प्रत्येक कोना स्वच्छ हो। इसके लिए देश के प्रत्येक नागरिक की भागेदारी आवश्यक है।

स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत—अपने ड्रीम प्रोजेक्ट स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत माननीय मोदीजी ने महात्मा गांधीजी की जयन्ती पर 2 अक्टूबर, 2014 ई० को राजपथ से लोगों को स्वच्छता की शपथ दिलाकर की। इस दिन उन्होंने स्वयं मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली स्थित वाल्मीकि बस्ती जाकर झाड़ू लगाकर फुटपाथ की सफाई की और स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत बने पहले जैविक शौचालय (बायो टॉयलेट) को जनता को समर्पित किया।

स्वच्छ भारत अभियान हेतु नवरत्नों की घोषणा—स्वच्छ भारत अभियान से देश के प्रत्येक नागरिक को जोड़ने के लिए माननीय प्रधानमन्त्री ने 2 अक्टूबर को ही देश के नौ प्रतिष्ठित लोगों को नवरत्न के रूप में नामांकित किया, जिनसे प्रेरणा ग्रहण करके देश के लोग स्वच्छ भारत अभियान में पूर्ण मनोयोग से लग जाएँ। उनके ये नवरत्न हैं—गोवा की राज्यपाल मृदुला सिन्हा, प्रसिद्ध क्रिकेटर सचिन तेन्दुलकर, योगगुरु बाबा रामदेव, कांग्रेसी नेता शशि थरूर, उद्योगपति अनिल अम्बानी, फिल्म अभिनेता कमल हासन, सलमान खान, अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा और प्रसिद्ध टी०वी० सीरियल 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' की पूरी टीम। इसी प्रकार 7 नवम्बर, 2014 ई० को उत्तर प्रदेश के वाराणसी के असी घाट पर मोदीजी ने स्वच्छ भारत अभियान के लिए उत्तर प्रदेश के नवरत्नों के रूप में भी नौ प्रसिद्ध लोगों को नामांकित किया।

मोदीजी ने इन लोगों के नामांकन के साथ इन सभी का आह्वान किया कि ये सभी लोग अपने स्तर पर नौ-नौ और लोगों को इस अभियान हेतु नामांकित करें, फिर वे लोग दूसरे नौ-नौ लोगों को नामांकित करें। इस प्रकार लोगों की एक शृंखला बनती चली जाएगी और देश के सभी लोग इस अभियान से जुड़कर भारत को स्वच्छ बनाने में सफल होंगे।

स्वच्छ भारत अभियान का प्रारूप—स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर चलाया गया जन-आन्दोलन है, जिसका प्रयास सन् 2019 ई० तक सम्पूर्ण भारत को स्वच्छ बनाना है। सरकारी सहायता हेतु इस अभियान को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है—

(क) शहरी क्षेत्रों के लिए स्वच्छ भारत अभियान—अभियान का उद्देश्य 1·04 करोड़ परिवारों को लक्षित करते हुए 2·5 लाख सामुदायिक शौचालय, 2·6 लाख सार्वजनिक शौचालय और प्रत्येक शहर में एक ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन की सुविधा प्रदान करना है। इस कार्यक्रम के तहत आवासीय क्षेत्रों में जहाँ व्यक्तिगत घरेलू शौचालयों का निर्माण करना मुश्किल है, वहाँ सामुदायिक शौचालयों का निर्माण करना तथा पर्यटन स्थलों, बाजारों, बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों जैसे प्रमुख स्थानों पर भी सार्वजनिक शौचालय का निर्माण करना प्रस्तावित है। यह कार्यक्रम पाँच साल की अवधि में 4401 शहरों में लागू किया जाएगा।

(ख) ग्रामीण क्षेत्रों के लिए स्वच्छ भारत अभियान—निर्मल भारत अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के लिए माँग आधारित एवं जनकेन्द्रित अभियान है, जिसमें लोगों की स्वच्छता सम्बन्धी आदतों को बेहतर बनाना, स्वसुविधाओं की माँग उत्पन्न करना और स्वच्छता सुविधाओं को उपलब्ध कराना शामिल है, जिससे ग्रामीणों के जीवन स्तर को बेहतर बनाया जा सके।

अभियान का उद्देश्य पाँच वर्षों में भारत को खुला शौच से मुक्त देश बनाना है। अभियान के तहत देश में लगभग 11 करोड़ 11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिए एक लाख चौंतीस हजार करोड़ रुपये खर्च किए जाएँगे। बड़े पैमाने पर प्रौद्योगिकी का उपयोगकर ग्रामीण भारत में कचरे का इस्तेमाल उसे पूँजी का रूप देते हुए जैव उर्वरक और ऊर्जा के विभिन्न रूपों में परिवर्तित करने के लिए किया जाएगा।

(ग) स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय अभियान—मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के अधीन स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय अभियान 25 सितम्बर, 2014 से 31 अक्टूबर, 2014 ई० के बीच केन्द्रीय विद्यालयों और नवोदय विद्यालयों में आयोजित किया गया। इस दौरान की जानेवाली गतिविधियाँ अग्र प्रकार रहीं—

(1) शिक्षकगण स्कूल कक्षाओं के दौरान प्रतिदिन बच्चों के साथ सफाई और स्वच्छता के विभिन्न पहलुओं पर, विशेष रूप से महात्मा गांधी की स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य से जुड़ी शिक्षाओं के सम्बन्ध में बात करें।
(2) कक्षा, प्रयोगशाला और पुस्तकालयों आदि की सफाई करना।
(3) स्कूल में स्थापित किसी भी मूर्ति या स्कूल की स्थापना करनेवाले व्यक्ति के योगदान के बारे में बात करना और इनकी मूर्तियों की सफाई करना।
(4) शौचालयों और पीने के पानीवाले क्षेत्रों की सफाई करना।
(5) रसोई और भण्डार-गृह की सफाई करना।
(6) स्कूल एवं बगीचों का रख-रखाव और सफाई करना।
(7) खेल के मैदान की सफाई करना।
(8) स्कूल-भवन का वार्षिक रख-रखाव, रँगाई एवं पुताई के साथ।
(9) निबन्ध, वाद-विवाद, चित्रकला, सफाई और स्वच्छता पर प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।
(10) बाल मन्त्रिमण्डलों का निगरानी दल बनाना और सफाई अभियान की निगरानी करना।

इसके अलावा फिल्म शो, स्वच्छता पर निबन्ध/पेंटिंग और अन्य प्रतियोगिताओं, नाटकों आदि के आयोजन द्वारा स्वच्छता एवं अच्छे स्वास्थ्य का सन्देश प्रसारित करना।

(घ) निर्मल गंगा अभियान—माननीय मोदीजी का एक और ड्रीम प्रोजेक्ट है—निर्मल गंगा अभियान। यद्यपि यह स्वच्छ भारत अभियान से अलग एक बड़ी योजना है, किन्तु गंगा के मैली रहते स्वच्छ भारत की कल्पना भला कैसे पूरी हो सकती है। इस अभियान के अन्तर्गत गंगा को सब प्रकार से स्वच्छ, निर्मल और पवित्र बनाने के साथ-साथ उसके घाटों और तटीय प्रदेशों को इस प्रकार विकसित करने की योजना है कि उससे पर्यटन के साथ-साथ जल-परिवहन की सुविधा भी उपलब्ध हो।

उपसंहार—आशा की जा सकती है कि स्वच्छ भारत अभियान की संकल्पना निश्चय ही साकार होगी; क्योंकि जिस अभियान का प्रणेता माननीय नरेन्द्र मोदीजी जैसा कर्मठ, श्रमशील, ईमानदार और राष्ट्रवादी व्यक्ति हो, उसकी सफलता में किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता है। जिस दिन यह अभियान सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाएगा, उस दिन न केवल कश्मीर, वरन् सम्पूर्ण भारत देश धरती का स्वर्ग कहलाएगा।

12. (क) (i) 'एचोऽयवायावः' सन्धि है— 1
(अ) उप + ओषति (ब) नौ + इकः
(स) रामस् + च (द) तत् + टीका।
उत्तर : (ब) नौ + इकः।

(ii) सच्चयनम्' का सन्धि-विच्छेद है— 1
(अ) सद + चयनम् (ब) सत् + चयनम्
(स) सद् + चयनम् (द) सच् + चयनम्।
उत्तर : (ब) सत् + चयनम्।

(iii) 'हरिः + चरति' की सन्धि है— 1
(अ) हरीचरति (ब) हरिश्चरति
(स) हरिर्चरति (द) हरिआचरति।
उत्तर : (ब) हरिश्चरति।

(ख) (i) 'नीलोत्पलम्' में समास है— 1
(अ) कर्मधारय (ब) द्विगु
(स) तत्पुरुष (द) द्वन्द्व।
उत्तर : (अ) कर्मधारय।

(ii) 'आसमुद्रम्' में समास है— 1
(अ) बहुव्रीहि (ब) अव्ययीभाव
(स) कर्मधारय (द) तत्पुरुष।
उत्तर : (ब) अव्ययीभाव।

13. (क) (i) 'आत्मसु' जगत् शब्द का रूप है— 1
(अ) द्वितीया, बहुवचन (ब) चतुर्थी, बहुवचन
(स) षष्ठी, बहुवचन (द) सप्तमी, बहुवचन।
उत्तर : (द) सप्तमी, बहुवचन।

(ii) 'नामभ्यः' रूप होता है— 1
(अ) पञ्चमी, बहुवचन में (ब) सप्तमी, द्विवचन में
(स) सप्तमी, बहुवचन में (द) षष्ठी, बहुवचन में।
उत्तर : (अ) पञ्चमी, बहुवचन में।

(ख) (i) 'स्था' धातु विधिलिङ्लकार मध्यम पुरुष, एकवचन का रूप होगा— 1
(अ) तिष्ठेयुः (ब) तिष्ठेः
(स) तिष्ठेव (द) तिष्ठेयम्।
उत्तर : (ब) तिष्ठेः।

(ii) 'नयेः' रूप होता है, 'नी' धातु के— 1
(अ) लट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ब) लोट्लकार, उत्तम पुरुष, द्विवचन
(स) लृट्लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन
(द) विधिलिङ्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।
उत्तर : (द) विधिलिङ्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

(ग) (i) 'दृष्ट्वा' शब्द में प्रत्यय है— 1
(अ) अनीयर् (ब) तल्
(स) तव्यत् (द) क्त्वा।
उत्तर : (द) क्त्वा।

(ii) 'महत्त्वम्' शब्द में प्रत्यय है— 1
(अ) मतुप् (ब) वतुप्
(स) क्त (द) त्व।
उत्तर : (द) त्व।

(घ) (i) '..........स्वाहा,' इस वाक्य में रिक्त स्थान में पद प्रयुक्त होगा— 1
(अ) इन्द्रम् (ब) इन्द्रेण
(स) इन्द्राय (द) इन्द्राणि।
उत्तर : (स) इन्द्राय।

(ii) विकारित अंग में विभक्ति होती है— 1
(अ) तृतीया (ब) पञ्चमी
(स) षष्ठी (द) सप्तमी।
उत्तर : (अ) तृतीया।

14. निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए— 2 + 2 = 4
(क) तुम्हें घर जाना चाहिए।
(ख) वह गाँव से पढ़ने आता है।
(ग) भिक्षुक राजा से धन माँगता है।
(घ) वह गुरु से प्रश्न पूछता है।

उत्तर : संस्कृत-अनुवाद—
(क) त्वं गृहं गच्छेः।
(ख) सः ग्रामात् पठनाय आगच्छति।
(ग) भिक्षुकः नृपं धनं याचते।
(घ) सः गुरुं प्रश्नं पृच्छति।

●●

© CHITRA PRAKASHAN